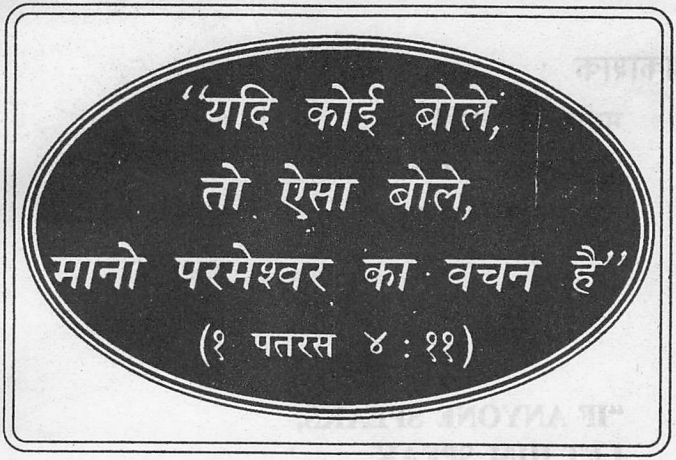

लेखक
सनी डेविड

सत्य-सुसमाचार रेडियो संदेशमाला

प्रकाशक :

मसीह की कलीसिया
पोस्ट बॉक्स ३८१५
नई दिल्ली-११००४९

**"IF ANYONE SPEAKS,
LET HIM SPEAK
AS THE ORACLES OF GOD"**

(*Hindi*)

by Sunny David

2000 Copies. 1997

Church of Christ
P.O. Box 3815
New Delhi-110049

सत्य सुसमाचार

मसीह के सुसमाचार का कार्यक्रम रेडियो पर सुनिये

श्रीलंका से प्रत्येक :

गुरूवार रात को ९ से ९.१५ तक

रविवार रात को ८.४५ से ९.०० तक

वक्ता

सनी डेविड

प्रस्तुतकर्त्ता

मसीह की कलीसिया नई दिल्ली

विषय-सूची

	पृष्ठ
१. सबसे अधिक आपको उद्धार की आवश्यकता है	१
२. ईश्वरीय चंगाई	६
३. "वह इनसे भी बड़े-बड़े काम करेगा"	११
४. "और विश्वास करनेवालों में ये चिन्ह होंगे"	१६
५. आश्चर्यकर्मों का उद्देश्य	२२
६. स्वर्ग में प्रवेश करने के नियम	२७
७. मसीह का अद्भुत सुसमाचार	३२
८. मृत्यु और पुनरूत्थान का सुसमाचार	३७
९. यीशु का अद्भुत व्यक्तित्व	४१
१०. यीशु क्रूस पर क्यों चढ़ाया गया था ?	४६
११. बाइबल से हम क्या सीखते हैं ?	५१
१२. सच्चा परिवर्तन	५६

सबसे अधिक आपको उद्धार की आवश्यकता है

मित्रो, आज हम सब जो इस बीसवीं सदी में रहते हैं, हम सचमुच में कई प्रकार से बड़े ही आशीषित हैं। इस सदी में अनेकों ऐसी-ऐसी वस्तुओं की ईजाद की गई है और अनेकों ऐसे-ऐसे परीक्षण किए गए हैं, जिनके द्वारा हमारे प्रति-दिन के रहन-सहन में भारी परिवर्तन आया है। आज हमारे घरों में, और हमारे आस-पास ऐसी-ऐसी चीज़ें उपलब्ध हैं, जिनकी हमारे पूर्वज कल्पना तक भी नहीं कर सकते थे। सो हम यह कहेंगे, कि यह बीसवीं सदी, जो लगभग अपने अंतिम चरणों में है, हम सबसे के लिए एक बड़ी ही उन्नतिशील और प्रगतिशील सदी सिद्ध हुई है और एक और बात जो हम इस सदी में अनुभव कर रहे हैं, वह यह है : कि लोगों में आज संतोष नहीं है। लोग अधिक से अधिक प्राप्त करना चाहते हैं। सभी को अपना "स्टैन्डर्ड" बढ़ाने की चिन्ता है। लोग देखते हैं, कि दूसरों के पास यह है, तो वह हमारे प्रास भी होना चाहिए, लोगों की कुछ ऐसी मनोवृत्ति हो गई है, कि "उसकी कमीज़ मेरी क़मीज़ से अधिक सफ़ेद होनी ही नहीं चाहिए।" सो अपने "स्टैन्डर्ड" को ऊँचा करने के लिए लोगों में पैसा कमाने की एक होड़ सी लग गई है। और इस बात को यूं तो सभी जगह पर पाया जाता है, पर विशेषकर हमारे शहरों में इसे एक बहुत बड़े पैमाने पर देखा जा सकता है। अपने "स्टैन्डर्ड" को "मेनटेन" करने के लिए, यह ख़रीदने के लिए, वह खरीदने के लिए, यह बनाने के लिए, वह बनाने के लिये, आजकल अधिकांश रूप से यह देखा जाता है, कि दोनों जन, अर्थात पिता और माता दोनों काम करने के लिए बाहर जाते हैं।

और इसका परिणाम क्या होता है ? इसका उन्हें एक बहुत बड़ा मूल्य चुकाना पड़ता है।

सबसे पहले तो इसका असर उनके बच्चों पर पड़ता है। वे स्वयं अपने बच्चों की देखभाल नहीं कर पाते। उनके बच्चों की देख-भाल कोई और करता है। या तो वे किसी को देखभाल करने को रखते हैं, या फिर उनके घर का कोई और सदस्य उनकी देखभाल करता है। कुछ माता-पिता तो अपने बच्चों को केवल छुट्टी के दिन ही मिल पाते हैं। क्योंकि जब तक वे दोनों या उनमें से कोई एक घर आता है, तो बच्चे सो जाते हैं। कुछ माता-पिता तो ऐसे हैं, जो पैसा कमाने के लिए और अमीर बनने के लिए अपने छोटे-छोटे बच्चों को छोड़कर विदेश भी चले जाते हैं। और जब तक वे अमीर बनने का अपना सपना पूरा करते हैं, तब तक उनके बच्चे बड़े हो जाते हैं, और उनके हाथ से निकल जाते है ! माँ-बाप का साया सिर पर न होने के कारण अकसर बच्चे बुरी आदतों में भी पड़ जाते हैं, और वे सांसारिक लालसाओं और बुरे कामों में खो जाते हैं।

दूसरे, इस भयंकर चुनाव का असर स्वयं पति-पत्नी के आपसी सम्बन्धों पर भी पड़ता है। यदि वे दोनों काम करते हैं, तो दोनों ही थके-हारे आते हैं। ऐसी स्थिति में घर के कामों को कौन करेगा ? सो उनमें आपस में झगड़ा होता है। दोनों एक-दूसरे पर दोष लगाते हैं। दोनों एक-दूसरे के बॉस बनते हैं। दिन-भर की थकान का गुस्सा, या काम पर घटी किसी घटना के झमेले का क्रोध वे या तो एक-दूसरे पर निकालते हैं या फिर अपने बच्चों पर निकालते हैं। और जहाँ पति-पत्नी एक-दूसरे से बहुत अधिक समय के लिए दूर रहते हैं तो धीरे-धीरे उनका स्नेह भी एक दूसरे के प्रति कम होता जाता है, और किसी अन्य व्यक्ति के उनके बीच में आने के कारण उनके सम्बन्ध बिगड़ जाते हैं और कई बार टूट भी जाते हैं। ऐसी परिस्थितियों में न केवल वे दोनों स्वयं ही दुख उठाते हैं पर यदि उनके बच्चे होते हैं तो उन्हें भी अपने माता-पिता के

गलत कामों का परिणाम भुगतना पड़ता है।

पवित्र बाइबल में एक जगह हमें यह शिक्षा मिलती है कि "संतोष सहित भक्ति बड़ी कमाई है। क्योंकि न हम जगत में कुछ लाए हैं और न कुछ यहाँ से ले जा सकते हैं, और यदि हमारे पास खाने और पहिनने को है, तो उसी में संतोष करना चाहिए। पर जो लोग धनी होना चाहते हैं, वे ऐसी परीक्षा और फंदे और बहुतेरी व्यर्थ और हानिकारक लालसाओं में फंसते हैं, जो मनुष्यों को बिगाड़ देती हैं, और विनाश के समुद्र में डुबा देती हैं। क्योंकि रूपए का लोभ सब प्रकार की बुराईयों की जड़ है, जिसे प्राप्त करने का प्रयत्न करते हुए कितनों ने विश्वास से भटककर अपने आप को नाना प्रकार के दुखों से छलनी बना लिया है।'' (१ तीमुथियुस ६ : ६–१०)

यहाँ विशेषकर दो बातों पर ध्यान दें–एक तो यह कि परमेश्वर की पुस्तक बाइबल यह कहती है कि जो लोग धनी होना चाहते हैं, अर्थात जो लोग अपने जीवनों का उद्देश्य ही धन कमाना समझते हैं, और जो अपनी इस चाहत को पूरा करने के लिए किसी भी अन्य बात को महत्व नहीं देते हैं, अर्थात जो लोग पैसा कमाकर, चाहे जैसे भी, केवल धनी बनना चाहते हैं, वे नाना प्रकार की परीक्षाओं में और फंदों में और लालसाओं में पड़ते हैं और दूसरे, आप इस बात पर भी ध्यान दें, कि परमेश्वर की पुस्तक यह नहीं कहती की रूपया सब प्रकार की बुराईयों की जड़ है, पर यह, कि "रूपए का लोभ'' सब प्रकार की बुराईयों की जड़ है।

सो मैं आप से पूछता हूँ कि आप के जीवन का उद्देश्य क्या है ? प्रभु यीशु मसीह ने सिखाया था कि यदि मनुष्य सारे जगत को भी प्राप्त करे और अपनी आत्मा की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा ? या मनुष्य अपनी आत्मा की छुड़ौती के बदले में क्या देगा ? (मती १६ : २६)। प्रभु यीशु ने कहा था, कि नाशमान भोजन के लिए परिश्रम न करो, परन्तु उस भोजन के लिए परिश्रम करो जो आनन्त जीवन तक ठहरता है। (यूहन्ना ६ : २७)। और,

बाइबल का लेखक एक जगह शिक्षा देकर कहता है कि "तुम न तो संसार से और न संसार में की वस्तुओं से प्रेम रखो : यदि कोई संसार से प्रेम रखता है, तो उस में पिता (परमेश्वर) का प्रेम नहीं है। क्योंकि जो कुछ संसार में है, अर्थात शरीर की अभिलाषा, और आंखों की अभिलाषा और जीविका का घमण्ड यह पिता की ओर से नहीं है, परन्तु संसार ही की ओर से है। और संसार और उसकी अभिलाषाएँ दोनों मिटते जाते हैं, पर जो मनुष्य परमेश्वर की इच्छा पर चलता है, वह सर्वदा बना रहेगा।" (१ यूहन्ना २ : १५–१७)।

एक मनुष्य होने के कारण हम सबको इस बड़ी ही महत्वपूर्ण बात को समझने की आवश्यकता है, कि अपनी सम्पत्ति की बहुतायत से हम अपने जीवन को बचा नहीं सकते। जब तक इस जीवन में हम इस बात को महसूस नहीं करते, कि हम केवल शरीर ही नहीं पर हम सब आत्मिक प्राणी हैं, और हमने पाप किया है, और हम परमेश्वर से दूर और अलग है, और किसी भी समय हम इस संसार में अपने पार्थिव शरीर को त्यागकर यहां से हमेशा के लिए जा सकते हैं। तब तक हम अपने जीवनों में परमेश्वर की आवश्यकता को अनुभव ही नहीं करेंगे; तब तक हम इस बात के महत्त्व को ही नहीं समझेंगे कि हमें अपने पापों से उद्धार पाकर परमेश्वर के लिए पवित्र और उसके स्वर्ग में प्रवेश करने के योग्य बनने की ज़रूरत है।

इस जगत में रहते हुए हम अपने लिए धन-सम्पत्ति, जायदाद और मकान और विद्या और बड़े-बड़े ओहदे हासिल कर सकते हैं। पर जिस वक्त हम यहाँ से उठाए जाएंगे हम अपने साथ पृथ्वी की कोई भी वस्तु नहीं ले जा पाएंगे। हम आत्मिक प्राणी हैं, और हमारी आत्मा ही यहां से जाएगी। मनुष्य इस जगत में केवल एक बार पैदा होता है, और केवल एक बार मरता है। ऐसी शिक्षा हमें पवित्र बाइबल में मिलती है। (इब्रानियों ९ : २७)। और परमेश्वर यह चाहता है कि जब इस जगत से हम जाएं तो हम उसके स्वर्ग में

प्रवेश करें। प्रभु यीशु ने कहा था, कि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास लाए वह नाश न हो परन्तु अन्नत जीवन पाए। (यूहन्ना ३: १६)।

परमेश्वर ने सारे जगत के पापों का प्रायश्चित करने को अपने एकलौते पुत्र प्रभु यीशु समीह को जगत में भेजा था। परमेश्वर ने यह होने दिया था कि वह पापियों के हाथों से सारे जगत के पापों का प्रयश्चित करने को क्रूस पर चढ़ाया जाए। आज हम सब परमेश्वर के अनुग्रह से उसके पुत्र यीशु मसीह के द्वारा अपने-अपने पापों से उद्धार प्राप्त करके उसके स्वर्ग में प्रवेश करने के योग्य बन सकते हैं। और यह तब होता है, जब हम अपने सारे मन से यीशु में विश्वास लाकर अपने सब पापों से मन फिराते हैं, और फिर अपने पापों की क्षमा प्राप्त करने के लिए यीशु की आज्ञानुसार जल में गाड़े जाकर बपतिस्मा लेते हैं, और फिर मसीह की आज्ञाओं पर चलकर ही जीवन व्यतीत करना अपने जीवनों का उद्देश्य बना लेते हैं। क्योंकि वही मार्ग है और वही जीवन का दाता है, और वही सच्चाई है, और उसी के द्वारा हम अपने पापों से मुक्ति प्राप्त करके अपने सृष्टिकर्ता के पास वापस लौट सकते हैं। हमें चाहिए कि हम सब इस बात को महसूस करें कि संसार और संसार की सारी वस्तुएँ नाशमान हैं। उन्हें हासिल करना मानो हवा को पकड़ना है। इसके विपरीत, हमारे जीवनों का उद्देश्य प्रभु यीशु मसीह होना चाहिए जिसके द्वारा हम अपने पापों से मुक्ति प्राप्त कर सकते हैं, और जिसके द्वारा हमें स्वर्ग में हमेशा का जीवन मिल सकता है। क्या आज आप अपना जीवन प्रभु यीशु को देंगे ?

ईश्वरीय चंगाई

मित्रो, इस प्रोग्राम में हम अपना ध्यान अध्यात्मिक बातों की ओर लगाते हैं। हम उन बातों के बारे में सीखते हैं, जिन्हें परमेश्वर ने हम सबके लिए प्रकट किया है। हम सबका केवल एक ही परमेश्वर है। और उस सच्चे परमेश्वर ने अपनी शक्ति तथा प्रेरणा से लिखवाकर हमें एक किताब दी है। उसी पुस्तक को हम बाइबल कहते हैं। जिसमें लिखी बातों के ऊपर इस कार्यक्रम में हम अपने ध्यानों को लगाते है। बाइबल की छियासठ पुस्तकों को लिखने में लगभग सोलह सौ बर्ष लगे थे। और परमेश्वर ने कई स्थानों पर अलग-अलग लोगों को प्रेरणा देकर अपनी बाइबल की पुस्तकों को लिखवाया था। आज से लगभग उन्नीस सौ वर्ष पूर्व बाइबल की सभी पुस्तकों को लिखा जा चुका था। लेकिन इन उन्नीस सौ वर्षों के भीतर बाइबल में लिखी परमेश्वर की शिक्षाओं को लोगों ने सभी जगह इतना अधिक तोड़ा-मरोडा है कि जिन बातों को परमेश्वर ने नहीं सिखाया है, और जिनका नाम तक भी बाइबल में कहीं नहीं मिलता है उन्हें भी परमेश्वर की शिक्षा के रूप में आज सिखाया और माना जा रहा है। और बाइबल की अनेकों शिक्षाओं को गलत ढंग से भी पेश किया जा रहा है। बाइबल में ऐसे लोगों के बारे में, रोगियों १६:१८ में, लिखा है कि ऐसे लोग हमारे प्रभु की नहीं, परन्तु अपने पेट की सेवा करते हैं, और चिकनी-चुपड़ी बातों से सीधे-सादे मन के लोगों को बहका देते हैं।

इस समय मैं आपके साथ ईश्वरीय चंगाई के बारे में बात करने जा रहा हूँ। क्योंकि आजकल इस विषय में बहुत कुछ कहा जा रहा है। बहुतेरे प्रचारक ऐसे-ऐसे दावे कर रहे हैं, कि आज वे यीशु के नाम से लोगों को हर प्रकार की बीमारियों से चंगा कर सकते हैं। कई स्थानों पर विशेष सभाओं का आयोजन किया जा रहा है और लोगों से कहा जा रहा है कि वे अपने बीमारों को लाएं; क्योंकि वहां कोई

खास प्रचारक आ रहे हैं जो लोगों को यीशु के नाम से तत्काल चंगा कर देंगे। और अनेकों भोले-भाले लोग अपने रोगियों को बड़े विश्वास से तथा बड़ी-बड़ी कठिनाईयों के साथ ऐसी-ऐसी सभाओं में ले जाते हैं। पर वे सबके सब वहाँ से निराश होकर लौटते हैं। और कईयों के विश्वासों को तो ऐसा बड़ा धक्का लगता है कि वे परमेश्वर और उसके पुत्र प्रभु यीशु मसीह से बहुत दूर चले जाते हैं।

यूं तो इस सम्बन्ध में मेरे पास अकसर पत्र आते ही रहते हैं। पर अभी-अभी एक पत्र मेरे पास बिहार के एक नवयुवक के पास से आया है। जिसने लिखा है कि वह एक विकलांग है और वह प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करता है। और इसी विश्वास के साथ वह एक मीटिंग में गया था, जहां पर अमरीका से एक प्रचारक आए हुए थे जिनका दावा था, कि वे सबको यीशु के नाम से चंगा कर देंगे। पर उस नवयुवक का कहना है, कि उसे बड़ा ही अफसोस है कि वह आज भी वैसे ही विकलांग है जैसे कि वह पहले था।

मित्रो, मैं आप सबको यह बताना चाहता हूँ कि आप सब निश्चित रूप से यह जान लें कि आज किसी भी व्यक्ति के पास ऐसी सामर्थ्य नहीं है कि वह आज किसी विकलांग को या किसी कोढ़ी को या किसी जन्म के अन्धे या लंगड़े व्यक्ति को यीशु के नाम से चंगा कर दे। ऐसा कोई भी व्यक्ति, पृथ्वी पर कहीं पर भी, एक भी नहीं है, चाहे वह अपने आपको कितना भी बड़ा धर्मात्मा या प्रचारक क्यों न मानता हो। किन्तु इसका अर्थ यह नहीं है, कि परमेश्वर में शक्ति नहीं है। इसके माने यह नहीं है, कि यीशु में ताकत नहीं है और न ही इसका तात्पर्य यह है, कि पवित्र आत्मा में सामर्थ्य नहीं है।

आरम्भ में परमेश्वर ने मनुष्य को मिट्टी से बनाया था। पर आज वह मनुष्य को मिट्टी से नहीं बना रहा है। क्या इसका अर्थ यह है, कि परमेश्वर आज ऐसा नहीं कर सकता ? क्या परमेश्वर की सामर्थ्य अब कम हो गई है ? क्या परमेश्वर कल और आज और

सदा एक सा नहीं है ? हाँ, परमेश्वर आज भी मनुष्य को मिट्टी से बना सकता है। पर ऐसा आज वह इसलिए नहीं कर रहा है, क्योंकि आज इसकी कोई आवश्यकता नहीं है। आरम्भ में यीशु ने अपने चेलों के सामने तथा अन्य लोगों के सामने अनेकों आश्चर्यकर्म किये थे, उन्हें यह विश्वास दिलाने के लिए कि वह सचमुच में परमेश्वर का पुत्र है। मान लीजिए, कि यीशु आकर उनसे कहता कि वह परमेश्वर का पुत्र है। तो क्या वे उसकी बात मान लेते ? नहीं। पर जब उसने उनके सामने आश्चर्यकर्म किये थे तो उसके चेलों ने और अन्य हज़ारों लोगों ने मान लिया था कि वह वास्तव में स्वर्ग से आया है और वह परमेश्वर का पुत्र है। (यूहन्ना ६:१४; ३:२; मत्ती १६:१६)। पर यह देखें, कि यीशु ने किस प्रकार के आश्चर्यकर्म परमेश्वर की सामर्थ्य से लोगों के बीच में किये थे, उन्हें यह विश्वास दिलाने के लिए कि वह वास्तव में परमेश्वर का पुत्र है। उसने पांच रोटियों तथा दो छोटी मछलियों से पांच हज़ार लोगों को पेट भरकर खाना खिलाया था, और फिर भी बारह टोकरे रोटियों के वहाँ बच गए थे। उसने दूर से केवल एक बार कहकर अनेक कोढ़ियों को सिर से पांव तक तत्काल चंगा कर दिया था। और जन्म के अंधे और लंगड़े और जिनके धड़ मारे हुए थे, उसके एक बार कहने से तत्काल चंगे हो जाते थे। बाइबल कहती है, कि सब प्रकार के विकलांग तथा अंगहीन लोग भी यीशु के पास लाए जाते थे और लिखा है, कि वे सबके सब चंगे हो जाते थे। यीशु मरे हुओं को फिर से जिन्दा कर देता था। एक आदमी जो मर चुका था, और जिसे चार दिन पहले कब्र में गाड़ा जा चुका था। यीशु ने कब्रस्थान में जाकर उसका नाम लेकर केवल एक बार उसे पुकारा था और लिखा है, कि वह व्यक्ति कफ़न में लिपटा हुआ तुरन्त कब्र में से बाहर आ गया ! (यूहन्ना ११)। क्या आज कोई भी ऐसा व्यक्ति है, इस पृथ्वी पर कहीं पर भी, जो यीशु के समान एक भी आश्चर्यकर्म कर सकता है ? कहां है वह ? धोखे में नहीं आईये।

क्या आज कोई ऐसा व्यक्ति है जो यीशु के नाम से, जिसकी

टांगे न हों उसे नई टांगे दे दे; और जिसकी आंखें न हों उसे नई आंखें दे दे; जिस के हाथ न हों उसे हाथ दे दे ? क्या आज कोई ऐसा व्यक्ति है जो पांच रोटियों से पांच हज़ार की भीड़ को भोजन खिला दे ? या क़ब्रस्थान में जाकर किसी गड़े हुए मुर्दे को ज़िन्दा करके बाहर बुला ले !

आप जानते है। कि आज ज़मीन पर कोई भी ऐसा इन्सान नहीं है जो यीशु के समान आज लोगों को चंगाई दे सकता है। हां दावे तो बहुत से लोग करते हैं और मनोवैज्ञानिक दबाव में आकर कुछ लोग यह भी कहने लगते हैं कि 'मेरे भीतर कुछ अनुभव हो रहा है; मुझे दर्द कुछ कम महसूस हो रहा है।'' पर ऐसा सब उनको अपने शरीरों के भीतर अनुभव हो रहा है। बाहर क्या है ? बाहर क्या दिखाई दे रहा है ? जब यीशु ने पांच रोटियों से पांच हज़ार आदमियों को खाना खिलाकर तृप्त किया था, और बारह टोकरे रोटियों के टुकड़ों के उठाए गए थे तो लोगों ने यह सब कुछ अपनी आंखों से देखा था। ऐसे ही जब उसने लाज़र को कब्र में से ज़िन्दा किया था। तो सब लोगों ने जो वहाँ थे अपनी-अपनी आंखों से उसे कब्र में से बाहर आते देखा था। और जब उसने अंन्धे, लंगड़े और अंगहीनों को नई आंखें दी थीं, नए पैर दिए थे; और नए अंग दिये थे, तो लोगों ने यह सब कुछ स्वयं अपनी-अपनी आंखों से देखा था। क्या आज कोई ऐसा व्यक्ति है इस पृथ्वी पर जो किसी के भी नाम से या किसी की भी सामर्थ्य से, इनमें से कोई भी एक काम करके दिखा सकता है ? नहीं ! बिल्कुल नहीं !! एक हज़ार बार नहीं !!! धोखे में नहीं आईए।

किन्तु, प्रभु यीशु ने अपने वास्तविक आश्चर्यकर्मों को करके और अपनी मृत्यु के बाद स्वयं अपने पुनरूत्थान के द्वारा हमेशा के लिए यह प्रमाणित कर दिया है, कि वह सचमुच में स्वर्ग से आया था और वह परमेश्वर का पुत्र है। उसने हमें शारीरिक चंगाई नहीं, परन्तु आत्मिक चंगाई देने की प्रतिज्ञा की है। पवित्र बाइबल में लिखा है, कि

जब वह परमेश्वर की मनसा से क्रूस पर चढ़ाकर मारा गया था, तो वह हम सबके पापों के कारण घायल किया गया था और वह हम सबके अधर्म के कामों के कारण कुचला गया था, और हम सबका मेल परमेश्वर के साथ करवाने के लिए उस पर ताड़ना पड़ी थी, ताकि उसके कोड़े खाने से हम सब के सब चंगे हो जाएं।

मित्रो, आत्मिक रोग से बड़ा और कोई रोग नहीं है और यीशु ने हमें आत्मिक चंगाई देनें के लिए अपने आपको क्रूस के ऊपर बलिदान किया था !

जब हम यीशु मसीह में अपने सारे मन से यह विश्वास करते हैं, कि वह हमारे पापों का प्रायश्चित है और अपने पापों से मन फिराकर यीशु की आज्ञा मानकर अपने पापों की क्षमा पाने के लिए बपतिस्मा लेते हैं। तो यीशु हमें पापों से मुक्त करके हमें स्वर्ग में परमेश्वर के पास जाने के योग्य बना देता है। हाँ, प्रभु यीशु आज सबको अपने पास बुला रहा है। परन्तु शारीरिक चंगाई देने के लिए नहीं, किन्तु आत्मिक चंगाई देने के लिए ! क्या आप अपने पापों से मुक्ति पाने के लिए उसके पास आना चाहते हैं ?

"वह इनसे भी बड़े-बड़े काम करेगा"

एक बार फिर से इस थोड़े से समय में हम, उस यीशु मसीह के ऊपर और उसके वचनों के ऊपर अपने ध्यानों को लगाएंगे जो स्वर्ग को छोड़कर पृथ्वी पर आया था, और जिसने सारे जगत के पापों को अपने ऊपर लेकर, क्रूस पर अपनी मृत्यु के द्वारा संसार के सब लोगों के पापों का प्रायश्चित किया था। जब वह इस जगत में था, तो उसने अनेकों बड़ी-बड़ी शिक्षाएँ दी थीं और अनेकों बड़े-बड़े सामर्थ के काम किये थे। और ये सब काम उसने अपने उन बारह चेलों के सामने किए थे जिन्हें उसने अपनी साक्षी देने के लिए चुना था। यीशु के वे चेले, उसके जीवन और उसके सामर्थ्यपूर्ण कामों, और उसकी मृत्यु और उसके पुनरूत्थान तथा उसके स्वर्गारोहण के गवाह थे। जब यीशु अपनी मृत्यु तथा पुनरूत्थान के द्वारा मानवता के उद्धार के काम को पूरा करके स्वर्ग में वापस चला गया था। तो उन चेलों ने सब जगह जा-जाकर उसके उद्धार के सुसमाचार का प्रचार किया था और उसके सुसमाचार की बातों को जगत के सब लोगों के लिए लिखा था। उन्हीं बातों को आज हम बाइबल के नए नियम में पढ़ते हैं।

जब यीशु की मृत्यु का समय करीब आ रहा था, तो यूहन्ना की पुस्तक के १४ अध्याय में, हम यूं पढ़ते हैं कि यीशु ने अपने चेलों से कहा था, कि "तुम्हारा मन व्याकुल न हो तुम परमेश्वर पर विश्वास रखते हो, तो मुझ पर भी विश्वास रखो। मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं, यदि न होते, तो मैं तुम से कह देता, क्योंकि मैं तुम्हारे लिए जगह तैयार करने जाता हूँ। और

यदि मैं जाकर तुम्हारे लिए जगह तैयार करूं, तो फिर आकर तुम्हें अपने यहां ले जाऊँगा, ताकि जहाँ मैं रहूँ वहीं तुम भी रहो। और जहाँ मैं जाता हूँ तुम वहाँ का मार्ग जानते हो। पर थोमा ने उससे कहा, हे प्रभु, हम नहीं जानते कि तू कहाँ जाता है, तो मार्ग कैसे जाने ?'' इस पर, "यीशु ने उससे कहा, मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूँ; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता। यदि तुमने मुझे जाना होता, तो मेरे पिता को भी जानते, और अब उसे जानते हो, और उसे देखा भी है। फिलिप्पुस ने उससे कहा, हे प्रभु, पिता को हमें दिखा दे : यही हमारे लिए बहुत है। यीशु ने उससे कहा, हे फिलिप्पुस, मैं इतने दिनों से तुम्हारे साथ हूँ, और क्या तू मुझे नहीं जानता ? जिस ने मुझे देखा है, उसने पिता को भी देखा है : तू क्यों कहता है कि पिता को हमें दिखा ? क्या तू प्रतीति नहीं करता कि मैं पिता में हूँ और पिता मुझमें है ? ये बातें जो मैं तुमसे कहता हूँ, अपनी ओर से नहीं कहता, परन्तु पिता मुझमें रहकर अपने काम करता है। मेरी ही प्रतीति करो कि मैं पिता में हूँ, और पिता मुझमें है; नहीं तो मेरे कामों ही के कारण मेरी प्रतीति करो। मैं तुमको सच-सच कहता हूँ, कि जो मुझ पर विश्वास रखता है, ये काम जो मैं करता हूँ वह भी करेगा, बरन इनसे भी बड़े काम करेगा, क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूँ।''

यहाँ, विशेष रूप से यीशु के इन शब्दों पर ध्यान दें कि प्रभु ने अपने शिष्यों से कहा था, कि जो मुझ पर विश्वास रखता है वह मुझसे भी बड़े काम करेगा। अब जब हम यीशु के सामर्थ्यपूर्ण कामों के ऊपर ध्यान देते हैं, तो हम देखते हैं, कि उसने मुर्दों को ज़िन्दा किया था, और वह झील के पानी के ऊपर चला था। उसने पांच रोटियाँ अपने हाथ में लेकर उनके लिए परमेश्वर का धन्यवाद दिया था, और फिर अपने चेलों से कहा था कि उन पांच रोटियों को पांच हज़ार लोगों की उस भीड़ के लोगों में बांट दो जो उसके सामर्थ्यपूर्ण कामों को देख-देखकर उसके पीछे हो लिए थे। और

बाइबल में लिखा है, कि उस दिन न केवल पांच हज़ार लोगों ने पेट भर खाया ही था पर रोटियों के टुकड़ों से भरी हुई बारह टोकरियाँ वहाँ से उठाई गई थीं। (यूहन्ना ६)। फिर, यीशु के बारे में हम पढ़ते हैं, कि उसने सब प्रकार के अपाहिजों को चंगा किया था उसके कह देने भर से कोढ़ियों के शरीर नए हो जाते थे, और सब प्रकार के लंगड़े, गूंगे, बहरे और अपंग, विकलांग तत्काल उसी क्षण पूरी तरह से चंगे हो जाते थे। (मत्ती १२ : १५, मरकुस ६:५६)। किन्तु, फिर भी, यीशु ने कहा था, कि जो मुझ पर विश्वास रखता है वह इनसे भी बड़े काम करेगा, "क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूँ।"

इससे हम यह निष्कर्ष निकालते हैं, कि यीशु ने कहा था, कि जब वह स्वर्ग में अपने पिता के पास वापस चला जाएगा, तो उसमें विश्वास रखनेवाले उसके शिष्य उससे भी बड़े काम करेंगे ! किन्तु, इसके कुछ ही समय पश्चात, यीशु को पकड़कर क्रूस पर चढ़ाया गया था, और जब उसकी मृत्यु हो गई थी तो उसे एक कब्र के भीतर दफ़ना दिया गया था। लेकिन जैसे कि उसने पूर्व घोषणा की थी, वह तीसरे दिन फिर से जी उठा था। और स्वर्ग में वापस जाने से पहले वह चालिस दिनों तक इस पृथ्वी पर रहा था। और जिस दिन वह स्वर्ग पर उठाया गया था, उस दिन उसने अपने चेलों को यह अन्तिम आज्ञा दी थी कि "तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो। और जो विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास नहीं करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।" (मरकुस १६:१५, १६)। इन बातों के बाद, यीशु अपने चेलों के देखते-देखते स्वर्ग पर उठा लिया गया था। और उसके चेले उसकी आज्ञानुसार यरूशलेम नगर में वापस चले गए थे। यरूशलेम नगर में यीशु के चेलों ने सबसे पहला तथा मुख्य काम यह किया था, कि उन्होंने लोगों की एक बहुत बड़ी भीड़ को यीशु की मृत्यु और उसके जी उठने का सुसमाचार सुनाया था। और ऐसा प्रभावकारी था मसीह का

सुसमाचार कि बाइबल में लिखा है, कि उसे सुनकर लोगों के दिल छिद गए थे। और उन्होंने प्रभु के चेलों से पूछा था कि हे भाईयो हमें बताओ, कि हम क्या करें? प्रभु के चेलों ने उनसे कहा था कि, तुममें से हर एक अपना-अपना मन फिराए और अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु के नाम से बपतिस्मा ले तो तुम पवित्र आत्मा का दान अर्थात् तुम उद्धार पाओगे। (प्रेरितों २:३८)। और बाइबल में हम पढ़ते हैं कि उस दिन लगभग तीन हज़ार लोगों ने पापों से क्षमा के लिए यीशु की आज्ञा मानकर बपतिस्मा लिया था। और इस प्रकार उन्हें पाप से मुक्ति मिली थी, और वे मसीह के उद्धार पाए हुए लोगों की मन्डली के अर्थात उसकी कलीसिया के अंग बन गए थे। (प्रेरितों २ अध्याय)। इसके बाद, बाइबल में हम पढ़ते हैं कि उन चेलों ने और जिन लोगों ने उनसे यीशु का सुसमाचार सुनकर उसमें विश्वास किया था और अपने-अपने पापों से मुक्ति पाने के लिए बपतिस्मा लिया था, उन सबने हर जगह जा-जाकर जगत के पापों के प्रायश्चित के लिए मसीह की मृत्यु और उसके पुनरूत्थान का प्रचार किया था। और जहाँ कहीं भी लोग मसीह के सुसमाचार को सुनकर उसमें विश्वास लाते थे और पाप से अपना-अपना मन फिराकर यीशु की आज्ञा से अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए जल में बपतिस्मा लेते थे, प्रभु उनके पाप क्षमा करके उन्हें पाप से मुक्त करता था, और उन्हें अपने उद्धार पाए हुए लोगों की मन्डली में मिला लेता था। (प्रेरितों २:४७; ८:१–१२)।

और मित्रो यही था, वह बड़ा तथा विशाल काम जिसके बारे में यीशु ने कहा था, कि "जो मुझमें विश्वास करेगा वह मुझसे भी बड़े काम करेगा; क्योंकि मैं अपने पिता के पास जाता हूँ।" यीशु की मृत्यु के कारण, जगत के सब लोगों को पाप से उद्धार मिल सकता है। क्योंकि यीशु ने अपनी क्रूस की मृत्यु के द्वारा सारे जगत के पापों का प्रायश्चित किया है। इसलिए संसार के सारे लोग यीशु मसीह के द्वारा अपने पापों से उद्धार पाकर परमेश्वर के स्वर्ग में प्रवेश करने की आशा प्राप्त कर सकते हैं। क्या मनुष्य के लिए इससे भी बड़ा कोई

और काम हो सकता है ? क्या इंसान इससे भी बड़ी किसी और चीज़ की इच्छा कर सकता है ?

प्रभु यीशु ने कहा था, कि यदि मनुष्य सारे जगत को भी प्राप्त करे और अपने प्राण अर्थात् आत्मा की हानि उठाए तो उसे क्या लाभ होगा ? या मनुष्य अपने प्राण अर्थात अपनी आत्मा के बदले में क्या देगा ? (मत्ती १६:२६)। प्रभु ने सिखाया था, कि नाशमान वस्तुओं को पाने के लिए परिश्रम न करो, परन्तु उसे पाने का प्रयत्न करो जिसका सम्बन्ध अनन्त जीवन से है। (यूहन्ना ६:२७)। और प्रभु यीशु ने सिखाया था, कि स्वर्ग के उस अनन्त जीवन को पाने के लिए यदि तुम्हें अपने शरीर के अंगों को भी खोना पड़े तो यह इससे भला है कि उनके रहते स्वर्ग के अनन्त जीवन से तुम वंचित रह जाओ। (मरकुस ८:४३–४७)।

आज आपके जीवनों में किस वस्तु का महत्व बड़ा है ? शरीर का या आत्मा का ? सांसारिक वस्तुओं का या आत्मिक वस्तुओं का ? मनुष्य का शरीर और संसार की प्रत्येक वस्तु नाशमान है। किन्तु हम सब आत्मिक प्राणी है। परमेश्वर ने हम सबको पाप के दण्ड से बचाने के लिए एक महान् बलिदान दिया है। और वह चाहता है कि हम सब अपने-अपने पापों से मुक्ति पाकर उसके स्वर्ग में हमेशा की ज़िन्दगी पाने के लिए प्रवेश करें। प्रभु यीशु मसीह हर एक मनुष्य के लिए परमेश्वर का वह मार्ग है, जिसके द्वारा प्रत्येक मनुष्य अपने पापों से छुटकारा पाकर परमेश्वर के स्वर्ग में प्रवेश कर सकता है। और मेरी आशा है कि आप उसमें विश्वास करके उसके पास आत्मिक चंगाई पाने के लिए आएंगे।

"और विश्वास करनेवालों में ये चिन्ह होंगे ....."

मुझे बड़ी ही प्रसन्नता है इस बात से कि एक बार फिर से मुझे यह मौका मिला है कि मैं आपके सामने परमेश्वर के वचन की सच्चाई को पेश करूं। जहाँ तक सच्चाई की बात है, उसकी हम सबको आवश्यकता है। प्रभु यीशु मसीह ने एक बार लोगों से कहा था, कि जब तुम सच्चाई को जानोगे तो सच्चाई तुम्हें आज़ाद करेगी। (यूहन्ना ८ : ३२)। फिर, कुछ समय बाद, यीशु ने फिर कहा था, कि मार्ग, सच्चाई और जीवन मैं ही हूँ। (यूहन्ना १४:६)। यीशु एक सच्चाई है जिसे जानकर लोग अंधकार और पाप से मुक्त हो जाते हैं। पर सच्चाई कड़वी भी लगती है और कुछ लोगों को सच्चाई सुनकर बुरा भी लगता है। गलतियों नाम की अपनी पत्री में प्रेरित पौलुस, गलतियों ४:१६ में, गलतिया नाम के स्थान पर रहने वाले मसीह के अनुयायीयों को लिखकर पूछता है कि "क्या सच्चाई बोलने के कारण मैं तुम्हारा शत्रु बन गया हूँ ?" वे लोग अनुचित चाल चल रहे थे और मसीह के सुसमाचार को बिगाड़ रहे थे। और जब पौलुस ने उनकी गलतियों को उन्हें बताया था तो सुनकर उन्हें अच्छा नहीं लगा था। इसलिए पौलुस ने उन से कहा था कि क्या सच बोलने के कारण मैं तुम्हारा शत्रु बन गया हूँ ? अकसर कभी-कभी कुछ लोग मुझे पत्र लिखकर कहते हैं कि कुछ बातों को मैं रेडियों पर न बोलूं या उन्हें किताबों में न लिखूँ क्योंकि उन्हें सब लोग सुन लेंगे और पढ़ लेंगे। वे नहीं चाहते कि मैं सच्चाई का बयान करूं। क्योंकि सच्चाई सुनकर उनके विश्वास को धक्का लगता है और उनकी बुराईयों का पर्दा-फ़ाश हो जाता है। लेकिन जिस तरह से एक बीमार को कड़वी दवाई पिलाई जाती है, क्योंकि वह

उसके लिए आवश्यक और लाभदायक होती है। ऐसे ही हम सबको सच्चाई सुनने की और जानने की आवश्यकता है। क्योंकि जब तक लोग सच्चाई को सुनेंगे नहीं और जानेंगे नहीं तब तक वे अंधकार में ही कैद रहेंगे। और जब वे सच्चाई को जानेंगे और उसे मानेंगे तो वे अंधकार से ज्योति में आ जाएंगे।

आपमें से अधिकांश लोगों ने कभी-न-कभी अवश्य सुना होगा कि किसी स्थान पर कोई व्यक्ति या "प्रचारक" आ रहा है जो यीशु के नाम से प्रार्थना करके बीमार लोगों को चंगा कर देगा। और बहुतेरे लोग बड़े ही विश्वास से वहाँ जाते भी हैं, परन्तु वास्तव में चंगाई किसी को भी नहीं मिलती। हां, कुछ लोग ज़रूर सामने आकर लोगों से कहते हैं, कि मुझे यहां दर्द रहता था या वहां दर्द रहता था और अब मैं अच्छा अनुभव कर रहा हूँ। लेकिन फिर भी सच्चाई यह है, कि जिन लोगों को वास्तव में चंगाई की आवश्यकता होती है उनमें से एक भी चंगा नहीं होता है। इसका कारण क्या है ? लोग ऐसी-ऐसी सभाओं का आयोजन करते क्यों हैं ? क्यों कुछ प्रचारक ऐसे दावे करते हैं कि वे सब प्रकार के रोगियों को प्रभु यीशु के नाम से चंगा कर देंगे ?

प्रभु यीशु ने जब वह इस पृथ्वी पर था, बड़े-बड़े सामर्थपूर्ण काम किये थे और उसने अनेकों बीमारों को भी चंगा किया था। प्रभु यीशु ने मुर्दों को ज़िन्दा कर दिया था और कोढ़ियों के सड़े-गले हुए जिस्मों को तत्काल नया कर दिया था। जिनकी आंखें नहीं थीं, और जिनके हाथ पांव नहीं थे, उन्हें प्रभु यीशु ने नई आंखें और नए हाथ पांव दिये थे। पर इस बात पर विशेष ध्यान दें, कि प्रभु यीशु ऐसे-ऐसे लोगों को चंगा करता था जिनके रोग बाहर से लोगों को दिखाई देते थे। वे लोग देख सकते थे कि उस व्यक्ति का हाथ या पांव है ही नहीं, या वह व्यक्ति कोढ़ी है। और जब परमेश्वर का पुत्र ऐसे विकलांगों और अपाहिजों को चंगा करता था, तो लोग उसके सामर्थपूर्ण कामों को देखकर उसमें विश्वास लाते थे। और यही कारण था जिसके सबब प्रभु

यीशु लोगों को ऐसी चंगाई देता था, ताकि सब लोग देखकर उस पर यह विश्वास लाएं कि वह वास्तव में परमेश्वर का पुत्र है। जितने भी लोग यीशु के पास लाए जाते थे, या जिसे भी प्रभु कह देता था, कि तू चंगा हो जा, तो वह व्यक्ति उसी क्षण तत्काल चंगा हो जाता था। और एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं होता था जो बिना चंगाई पाए प्रभु यीशु के पास से चला जाता था। लोग अपने बीमारों को खाटों और खटोलों पर डालकर लाते थे अर्थात वे विकलांग होते थे, और यीशु से चंगाई पाकर वे पूर्ण रूप से स्वस्थ होकर उछलते-कूदते अपने-अपने घरों को चले जाते थे। एक जगह बाइबल में, मरकुस ६:५६ में इस प्रकार लिखा है, कि "जहां कहीं वह गांवों, नगरों या बस्तियों में जाता था तो लोग बीमारों को बाज़ारों में रखकर उससे बिनती करते थे, कि वह उन्हें अपने वस्त्र के आंचल को ही छू लेने दे और जितने उसे छूते थे, वे सब चंगे हो जाते थे।" मित्रो, वे सब के सब चंगे हो जाते थे। एक भी व्यक्ति यीशु के पास से बिना चंगाई पाए वापस नहीं जाता था।

प्रभु यीशु जब पापियों के लिए अपनी मृत्यु के बाद फिर से जी उठा था, तो वह स्वर्ग पर वापस चले जाने से पहले चालीस दिनों तक इस पृथ्वी पर रहा था। परन्तु उसके चेलों को, जिन्हें वह सारे जगत में अपने सुसमाचार को प्रचार करने के लिए भेजने जा रहा था, इस बात पर विश्वास ही नहीं हो रहा था कि यीशु सचमुच में जी उठा है। इस सम्बन्ध में हम बाइबल में से मरकुस की पुस्तक के सोलहवें अध्याय के नौवे पद से आरम्भ करके इस प्रकार पढ़ते हैं।

"सप्ताह के पहले दिन, यानि रविवार को, भोर होते ही यीशु जी उठकर सबसे पहले मरियम मगदलीनी को जिसमें से उस ने सात दुष्टात्माएँ निकाली थीं, दिखाई दिया। तब उसने जाकर उसके चेलों को जो शोक में डूबे हुए थे और रो रहे थे समाचार दिया। और उन्होंने यह सुनकर कि वह जीवित है, और उसने यीशु को देखा है, प्रतीति न की अर्थात उसका विश्वास न किया। इसके बाद यीशु दूसरे

रूप में उनमें से दो को जब वे गांव की ओर जा रहे थे दिखाई दिया। सो उन्होंने भी जाकर औरों को समाचार दिया परन्तु उन्होंने उनकी बात पर भी विश्वास नहीं किया। इसके बाद, वह उन ग्यारहों को जब वे भोजन करने बैठे थे दिखाई दिया, और उनके अविश्वास और मन की कठोरता पर उलहाना दिया, क्योंकि जिन्होंने उसके जी उठने के बाद उसे देखा था उन्होंने उनकी प्रतीति नहीं की थी। और उसने उनसे कहा कि तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो। जो विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।'' और फिर प्रभु ने उन चेलों से कहा था कि "विश्वास करनेवालों में यह चिन्ह होंगे कि वे मेरे नाम से दुष्ट आत्माओं को निकालेंगे। वे नई-नई भाषाएँ बोलेंगे, वे सापों को उठा लेंगे, और यदि वे नाशक वस्तु भी पी जाएँ तौभी उनकी कुछ हानि न होगी, वे बीमारों पर हाथ रखेंगे और वे चंगे हो जाएंगे। निदान प्रभु यीशु उनसे बात करने के बाद स्वर्ग पर उठा लिया गया। और उन्होंने अर्थात् चेलों ने निकलकर हर जगह प्रचार किया और प्रभु उनके साथ काम करता रहा और उन चिन्हों के द्वारा जो साथ-साथ होते थे वचन को दृढ़ करता रहा।''

अब यहाँ से हम क्या सीखते हैं ? यहाँ से हम यह सीखते हैं, कि यीशु ने अपने प्रेरितों को सारे जगत में अपना सुसमाचार सुनाने को भेजा था। और प्रभु ने कहा था कि जो कोई भी सुनकर विश्वास लाएगा और बपतिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा, अर्थात उसके सब पाप क्षमा किए जाएंगे। पर वे चेले, जिन्हें यीशु अपना सुसमाचार प्रचार करने को सारे जगत में भेज रहा था स्वयं यीशु में पक्का विश्वास नहीं लाए थे। और इसीलिए प्रभु ने उनके अविश्वास और मन की कठोरता के लिए उन्हें डांटा था, क्योंकि उन्होंने उनकी बात पर विश्वास नहीं किया था जिन्होंने उसके जी उठने का समाचार उन्हें दिया था। और मत्ती २८ : १७ में लिखा

है कि जब यीशु को उन्होंने स्वयं देखा था तौभी उनमें से कुछ को उस पर सन्देह हुआ था। इसीलिये प्रभु ने उनसे कहा था कि "विश्वास करनेवालों में ये चिन्ह होंगे।" प्रभु यीशु के कहने का यहां यह तात्पर्य कदापि नहीं था, कि जितने भी लोग उसमें विश्वास करेंगे वे सबके सब नई भाषाएँ बोलेंगे, सांपों को उठा लेंगे और ज़हर पी लेंगे और उन्हें कुछ हानि नहीं होगी, या वे बीमारों को चंगा कर देंगे। यह प्रतिज्ञा प्रभु ने अपने उन चेलों से की थी जिन्हें उसने आरम्भ में सुसमाचार प्रचार करने को संसार में भेजा था। और जब वे प्रचार करते थे और चिन्ह दिखाते थे तो प्रभु अपने वचन को उन चिन्हों के द्वारा दृढ़ करता था। वे प्रभु की सामर्थ से लोगों से उन्हीं की भाषाओं में उनसे बातें करते थे अर्थात उन्हें किसी अनुवादक की आवश्यकता नहीं होती थी। वे सांपों को उठा लेते थे और विष पी जाते थे पर उन्हें कोई हानि नहीं होती थी। और कोई भी बीमार, विकलांग तथा अपाहिज जब उनके पास लाया जाता था तो उसे वे तत्काल, उसी क्षण पूरी तरह से चंगा कर देते थे।

किन्तु आज कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं है जो ऐसे-ऐसे काम कर सकता है। कया आज कोई किसी विकलांग को नए अंग दे सकता है ? क्या आज कोई ऐसी भाषा बोल सकता है जिससे वह परिचित नहीं है ? क्या आज कोई कोबरा या नाग या किसी ज़हरीले सांप को उठा सकता है ? कया आज कोई बिना हानि उठाए विष या ज़हर पी सकता है ?

आज हमारे पास बाइबल में प्रभु द्वारा दृढ़ किया हुआ वचन उपलब्ध है। आज हमें चिन्हों को देखकर विश्वास लाने की आवश्यकता नहीं है। क्योंकि विश्वास सुनने से और सुनना मसीह के वचन से होता है। और जो विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा। (रोमियों १०:१७; मरकुस १६:१६) ऐसा बाइबल हमें सिखाती है।

इसलिए धोखे में नहीं आइए। यदि आप शारीरिक रूप से बीमार हैं तो अपना ईलाज करवाईए। पर ऐसे-ऐसे लोगों की बातों में न आएं जो ईश्वर के नाम से चंगाई देने का दावा करते हैं। हाँ, यदि आप आत्मिक रूप से बीमार हैं तो प्रभु यीशु के पास आईये, उसमें विश्वास करके और उसकी आज्ञाओं को मानकर। वह आपके सब पापों को क्षमा करके आपको एक नया इंसान बना देगा। (२ कुरिन्थियों ५:१७) और आपको एक ऐसी अद्‌भुत आशा देगा जिसे यह संसार नहीं दे सकता।

आश्चर्यकर्मों का उद्देश्य

इस कार्यक्रम में हम आपको परमेश्वर के पुत्र प्रभु यीशु मसीह का सुसमाचार सुनाते हैं। हम आपको बताते हैं कि आज से लगभग दो हज़ार वर्ष पूर्व परमेश्वर के पुत्र प्रभु यीशु मसीह का जन्म हुआ था। परमेश्वर ने उसे सारे जगत का उद्धार करने को स्वर्ग से पृथ्वी पर भेजा था। वह जगत में अपने प्राणों को बलिदान करने के लिए आया था। वह पवित्र परमेश्वर का पुत्र अपनी मृत्यु के द्वारा सारे जगत के पापों का प्रायश्चित करने को स्वर्ग से आया था। बाइबल के नए नियम में हम प्रभु यीशु के अद्‌भुत जन्म के बारे में पढ़ते हैं। हम पढ़ते हैं, कि उसका जीवन कैसा महान था और उसकी शिक्षाएं कैसी प्रभावकारी थीं और उसके काम कैसे सामर्थपूर्ण थे। ये सब चीज़ें इस बात को प्रमाणित करती हैं कि वह वास्तव में परमेश्वर का पुत्र है।

जब हम प्रभु यीशु मसीह पर और उसके जीवन पर विचार करते हैं, तो हमारा ध्यान अवश्य ही उसके उन सामर्थपूर्ण कामों के ऊपर जाता है, जिन्हें देखकर लोग यह विश्वास लाते थे कि वह हकीकत में परमेश्वर का पुत्र है। यीशु की मृत्यु के बाद उसके एक चेले ने बाइबल की एक पुस्तक में लिखकर यूं कहा था कि "यीशु ने और भी बहुत चिन्ह चेलों के सामने दिखाए थे, जो इस पुस्तक में लिखें नहीं गए। परन्तु ये इसलिए लिखे गए हैं, कि तुम विश्वास करो कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है : और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ।" (यूहन्ना २०:३०, ३१)।

यीशु इस पृथ्वी पर पापियों के लिए मरने के लिए आया था। यही उसके जीवन का एकमात्र, महान और प्रमुख उद्देश्य था। परन्तु इससे पहले कि वह जगत के पापों का प्रायश्चित करने को क्रूस पर चढ़ाकर मारा जाता। उसने अपने उन चेलों के सामने, जिन्हें उसने

चुना था और जो उसके जीवन और उसके सुसमाचार की गवाही देने के लिए सारे जगत में जाने वाले थे, उनके सामने उसने अनेकों आश्चर्यकर्म और सामर्थ के काम किये थे। इसलिए नहीं कि उसे कुछ मान-सम्मान चाहिए था, या वह लोगों में प्रसिद्ध होना चाहता था पर वे सारे सामर्थ के काम उसने अपने चेलों के सामने इस उद्देश्य से किये थे कि उन्हें यह विश्वास हो जाए कि वह यीशु, वास्तव में, परमेश्वर का पुत्र है। उन्हें यीशु ने अपनी मृत्यु के सुसमाचार को सारे जगत को देने के लिए चुना था। वे ही उसके सुसमाचार को सारे जगत के लिए बाइबल की पुस्तकों में लिखने जा रहे थे। इसलिए यह बड़ा की आवश्यक था कि उन्हें यह पूरा निश्चय हो जाए कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र और जगत का उद्धारकर्त्ता है। पर जब यीशु की मृत्यु और पुनरूत्थान और स्वर्गारोहण के बाद वे उसके सुसमाचार का प्रचार सब लोगों के बीच में करेंगे, तो उन्हें अर्थात् उन लोगों को कैसे विश्वास होगा कि वे सचमुच में परमेश्वर का ही सुसमाचार उन्हें सुना रहे हैं ? इसलिए, बाइबल में हम पढ़ते हैं कि प्रभु यीशु ने स्वर्ग पर वापस जाने से पहले अपने उन बारह चेलों से प्रतिज्ञा करके कहा था कि "यूहन्ना ने तो पानी में बपतिस्मा दिया है, परन्तु थोड़े दिनों के बाद तुम पवित्रात्मा से बपतिस्मा पाओगे" और "जब पवित्रात्मा तुम पर आएगा। तब तुम सामर्थ पाओगे; और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में और पृथ्वी की छोरे तक मेरे गवाह होगे।" (प्रेरितों १:५, ८)।

सो इस प्रकार हम देखते हैं, कि जो सामर्थ यीशु के पास थी उसी सामर्थ को प्रभु ने अपने प्रेरितों को भी देने की प्रतिज्ञा की थी। और प्रभु ने अपनी इस प्रतिज्ञा को अपने स्वर्गारोहण के दस दिन के बाद यरूशलेम में पूरा किया था। जहां उसके चेले उसी प्रतिज्ञा के पूरा होने की बाट जोह रहे थे। (प्रेरितों १:४)। वह दिन यहूदियों के एक विशेष त्यौहार "पिन्तेकुस्त" का दिन था, और उस

दिन अनेक देशों से भिन्न-भिन्न भाषाएँ बोलनेवाले यहूदी यरूशलेम में आए हुए थे। तभी एकाएक वहाँ आकाश से बड़ी आंधी की सी सनसनाहट का शब्द हुआ और प्रेरित पवित्र आत्मा से भर गए और जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ दी, वे अन्य-अन्य भाषा बोलने लगे। बाइबल में लिखा है, कि यह सब देखकर वहाँ लोगों की भीड़ लग गई और लोग घबरा गए, क्योंकि हर एक को यही सुनाई देता था कि ये मेरी ही भाषा बोल रहे हैं। और वे सब चकित और अचम्भित होकर कहने लगे कि देखो ये जो बोल रहे हैं क्या ये सब गलील के रहनेवाले नहीं ? तो फिर क्यों हममें से हर एक अपनी-अपनी जन्म भूमि की भाषा सुनता है ? (प्रेरितों २:१, ८)। वे लोग बेकार का शोर नहीं मचा रहे थे। वे गले से अजीब-अजीब बेमानी और बेतुकी आवाज़ें नहीं निकाल रहे थे। पर वे उन लोगों की भाषाओं में उनसे बोल रहे थे, और वे सब लोग अपनी-अपनी जन्म भूमि की भाषा में सुन रहे थे और समझ रहे थे कि वे क्या कह रहे हैं। यीशु ने अपने बारह चेलों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा देने की प्रतिज्ञा दी थी और प्रभु ने कहा था, कि जब पवित्रात्मा तुम पर आएगा तो तुम सामर्थ पाओगे। और उसी की सामर्थ से वे चेले लोगों से उन्हीं की भाषाओं में बोल रहे थे। उन्होंने लोगों की उस भीड़ को उन्हीं की भाषाओं में यीशु का सुसमाचार सुनाया था जिसे सुनकर लोगों ने विश्वास किया था और उनके हृदय छिद गए थे। और उन्होंने यीशु के प्रेरितों से पूछा था कि वे अपने पापों से मुक्ति पाकर किस प्रकार से फिर से परमेश्वर के पास वापस आ सकते हैं ? और प्रेरितों ने उन्हें आज्ञा दी थी कि वे अपना-अपना मन फिराएं और अपने-अपने पापों की क्षमा पाने के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा लें। और लगभग ३००० लोगों ने उस दिन जल में यीशु का बपतिस्मा लेकर उसे अपना मुक्तिदाता बना लिया था। बाइबल कहती है, कि वहां सब लोगों पर भय छा गया था, और बहुत से अद्‌भुत काम और चिन्ह प्रेरितों

के द्वारा प्रकट होते थे।

फिर आगे हम पढ़ते हैं, कि प्रेरित यूहन्ना और पतरस ने एक जन्म के लंगड़े को यीशु के नाम से उठाकर खड़ा कर दिया था और वह उछल कर खड़ा हो गया था और लोगों की भीड़ लग गई थी और उन्होंने सबको यीशु का सुसमाचार सुनाया था। (प्रेरितों ३ अध्याय) और फिर प्रेरितों के कामों की पुस्तक के पांचवें अध्याय में लिखा है, कि "प्रेरितों के हाथों से" जी हां, "प्रेरितों के हाथों से बहुत चिन्ह और अद्‌भुत काम लोगों के बीच में दिखाए जाते थे यहां तक कि लोग बीमारों को सड़कों पर ला-लाकर खाटों और खटोलों पर लिटा देते थे कि जब पतरस प्रेरित आए, तो उसकी छाया ही उनमें से किसी पर पड़ जाए। और यरूशलेम के आस-पास के नगरों से भी बहुत लोग बीमारों और अशुद्ध आत्माओं के सताए हुओं को ला-लाकर इकट्ठे करते थे और सब अच्छे कर दिये जाते थे।" (प्रेरितों ५:१२, १६) यहां दो बातों पर विशेष ध्यान दे : एक तो यह कि सामर्थपूर्ण काम केवल प्रेरितों के हाथों से किए जाते थे, और दूसरे यह कि हज़ारों की संख्या में जो बीमार वहां लाए जाते थे वे सबके सब चंगे कर दिए जाते थे। यानी, बिना चंगाई के एक भी, चाहे वह कोई क्यों न हो, वहां से वापस नहीं जाता था। और यह बात भी ग़ौर करने की है कि किस तरह के लोगों को वे प्रेरित चंगा करते थे ! अभी कुछ ही क्षण पहले हमने यह देखा था कि एक ऐसे व्यक्ति को उन्होंने चंगा किया था जो जन्म से लंगड़ा ही पैदा हुआ था, जिसे लोग उठाकर लाते थे। और प्रेरितों के कामों की पुस्तक के नौ अध्याय में हम ऐनियास के बारे में पढ़ते हैं, जो आठ बरस से लकवे का मारा खाट पर पड़ा था। प्रेरित पतरस ने ऐनियास से केवल एक बार कहा कि ऐनियास यीशु मसीह तुझे चंगा करता है, उठ खड़ा हो। और लिखा है कि ऐनियास तुरन्त उठकर खड़ा हो गया। इसी अध्याय में हम तबीता नाम की एक महिला के बारे में पढ़ते हैं। जो मर गई थी और

लोग उसकी लाश को कब्र में गाड़ने के लिए तैयारी कर रहे थे। किन्तु पतरस वहां आया और उसने तबीता की लाश की ओर देखकर केवल एक बार उससे कहा कि "हे तबीता उठ !" और उसने तुरन्त आंखें खोल दी और उठकर बैठ गई।

इसी प्रकार की अनेकों अन्य घटनाओं के बारे में भी हम बाइबल में पढ़ते हैं। जिनसे हम यह देखते हैं कि प्रेरितों ने, जिन्हें प्रभु यीशु मसीह ने पवित्र आत्मा के बपतिस्मे के द्वारा सामर्थ दी थी, अंगहीनों को नए अंग दिये थे और विकलांगों को चंगा किया था और मरे हुओं को फिर से ज़िन्दा कर दिया था। और इस सबका परिणाम यह निकला था कि अनेकों लोगों ने प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास किया था। और वास्तव में इसी उद्देश्य से प्रभु ने अपने प्रेरितों को ईश्वरीय चंगाई प्रदान करने की सामर्थ दी थी। इसीलिए बाइबल में लिखा है कि "प्रेरितों के हाथों से" बहुत से सामर्थ के काम होते थे। परन्तु आज संसार में प्रभु के प्रेरित नहीं हैं। इसलिए आज वैसी चंगाई कोई भी, कहीं पर भी, किसी को भी नहीं दे सकता जैसी कि प्रेरित, लोगों को उस समय दिया करते थे। आज हमारे पास उन प्रेरितों के द्वारा लिखा हुआ परमेश्वर का वचन विद्यमान है, जिसे सुनकर हम प्रभु पर विश्वास लाते हैं और उसे मानकर अपने आपको परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के योग्य बनाते हैं। उस समय उन लोगों के पास परमेश्वर का वचन लिखित रूप में नहीं था–उस समय परमेश्वर की प्रेरणा से उसे लिखा जा रहा था–इसलिये आश्चर्यक्रमों को देखकर वे लोग विश्वास लाते थे। और इसी उद्देश्य से परमेश्वर आश्चर्यक्रमों को होने देता था। पर आज जबकि उसका सम्पूर्ण वचन बाइबल में हमारे पास है, तो आज इसलिए आश्चर्यक्रमों की कोई आवश्यकता नहीं है।

स्वर्ग में प्रवेश करने के नियम

मित्रो, पृथ्वी पर प्रत्येक मनुष्य की इच्छा यही है कि वह स्वर्ग में प्रवेश करे। क्योंकि यदि मनुष्य स्वर्ग में प्रवेश नहीं करेगा तो अवश्य ही वह नरक में प्रवेश करेगा। स्वर्ग वह स्थान है, जहां परमेश्वर है। और नरक वह स्थान है जहां परमेश्वर नहीं है। स्वर्ग में हमेशा की ज़िन्दगी है। और नरक में हमेशा की मौत है। स्वर्ग एक ऐसा स्थान है जहां कभी रात नहीं होगी, जहां कभी अंधकार नहीं होगा, और नरक वह जगह है जहां हमेशा अंधेरा ही रहेगा। प्रभु यीशु ने एक बार शिक्षा देकर कहा था कि "यदि तेरा हाथ तुझे ठोकर खिलाए तो काट डाल, क्योंकि टुन्डा होकर जीवन में प्रवेश करना तेरे लिए इससे भला है कि दो हाथ रहते हुए तू नरक के बीच उस आग में डाला जाए जो कभी बुझने की नहीं। और यदि तेरा पांव तुझे ठोकर खिलाए तो उसे काट डाल। लंगडा होकर जीवन में प्रवेश करना तेरे लिए इससे भला है कि दो पांव रहते हुए तू नरक में डाला जाए। और यदि तेरी आंख तुझे ठोकर खिलाए तो उसे निकाल डाल, क्योंकि काना होकर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना तेरे लिए इससे भला है कि दो आंख रहते हुए तू नरक में डाला जाए।" (मरकुस ९:४३-४७)

इससे हम यह सीखते हैं कि नरक वास्तव में एक बड़ा ही भयानक स्थान है। बाइबल में नरक को ऐसा स्थान कहकर सम्बोधित किया गया है जहां, हमेशा के लिए अंधकार होगा; जहां रोना और दांतों का पीसना होगा। बाइबल में नरक को आग की एक ऐसी भयानक झील कहकर दर्शाया गया है जिसकी आग कभी बुझती नहीं है और जहां से कभी किसी का छुटकारा नहीं हो सकता। जिस प्रकार स्वर्ग एक आत्मिक तथा अनन्त स्थान है, वैसे ही नरक भी एक आत्मिक तथा अनन्त स्थान है। न तो स्वर्ग में मनुष्य का

नाशमान शरीर प्रवेश करेगा और न ही नरक में मनुष्य की शारीरिक देह प्रवेश करेगी। बाइबल हमें यह सिखाती है कि जिस दिन परमेश्वर का पुत्र प्रभु यीशु मनुष्यों का न्याय करने के लिए स्वर्ग से प्रकट होगा, उस दिन सभी मरे हुए लोग उसी तरह से जिलाए जाएंगे जैसे कि स्वयं यीशु मसीह की देह को मरे हुओं में से जिलाया गया था। और परमेश्वर की सामर्थ से सभी मरनहार देह क्षण भर में अमरता को पहन लेंगी। और प्रत्येक जन अपने-अपने कामों के अनुसार अपना प्रतिफल पाएगा। (१ कुरिन्थियों १५ तथा २ कुरिन्थियों ५:१०)। इसलिए प्रभु यीशु ने एक जगह शिक्षा देकर इस प्रकार कहा था, कि, "जो शरीर को घात करते हैं, पर आत्मा को घात नहीं कर सकते, उनसे मत डरना, पर उसी से डरो जो आत्मा और शरीर दोनों को नरक में नाश कर सकता है।" (मती १०:२८)। और इस बात पर भी ग़ौर करें कि प्रभु ने एक अन्य स्थान पर नरक के बारे में यूं कहा था कि वहां सारे अधर्मी अनन्त दण्ड भोगेंगे, परन्तु धर्मी स्वर्ग में अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे।

नरक क्योंकि अत्यन्त ही भयानक है, और स्वर्ग क्योंकि अत्यन्त ही सुन्दर है, इसलिए परमेश्वर नहीं चाहता है कि कोई भी मनुष्य अपने पापों के कारण नरक में प्रवेश करे। पर वह यह चाहता है कि हम सब के सब उसके स्वर्ग में ही प्रवेश करें। इसी कारण से परमेश्वर को एक मनुष्य का रूप धारणा करके इस पृथ्वी पर आना पड़ा था। वह लगभग तैंतिस वर्षों तक इस ज़मीन पर रहा था। उसने एक ऐसा जीवन व्यतीत किया था जिसमें कोई भी बुराई नहीं थी। उसकी प्रभावशाली शिक्षाएँ और सामर्थपूर्ण काम सब इस बात की साक्षी थे कि वह सचमुच में परमेश्वर था। किन्तु उसी ने सारे जगत के सब पापों को अपने ऊपर लेकर, क्रूस पर अपना बलिदान देकर, सारी मानवता के पापों का प्रायश्चित किया था। ताकि उसके द्वारा अपने पापों से छुटकारा प्राप्त करके हम सब परमेश्वर के स्वर्ग

में जाने के योग्य बन जाएं।

यद्यपि प्रत्येक मनुष्य स्वर्ग में जाना तो चाहता है। परन्तु कोई भी मनुष्य पाप के कारण स्वर्ग में जाने के योग्य नहीं है। क्योंकि सबने पाप किया है और सबके सब परमेश्वर की दृष्टि में अपवित्र हैं। और इंसान अपने प्रयत्नों से कोई भी ऐसा काम नहीं कर सकता, और न कोई वस्तु अपने पास से दे सकता है, जिसके द्वारा उसके पापों का प्रायश्चित हो जाए, और वह पापी से पवित्र तथा अधर्मी से धर्मी बन जाए। क्योंकि क्या है मनुष्य के पास जिसे वह अपने पापों के छुटकारे के बदले में परमेश्वर को अर्पण कर सकता है ? इसीलिए परमेश्वर को स्वयं एक मनुष्य बनना पड़ा। पवित्र बाइबल में लिखा है कि "हर एक अपने ही हित की नहीं वरन दूसरों के हित की भी चिन्ता करे। और जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा स्वभाव भी हो। जिसने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा। बरन उसने अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया और दास का स्वरूप धारण किया और मनुष्य की समानता में हो गया। और मनुष्य के रूप में प्रकट होकर उसने अपने आपको दीन किया, और यहां तक आज्ञाकारी रहा, कि मृत्यु, हां क्रूस की मृत्यु भी सह ली। (फिलिप्पियों २:४, ८) प्रभु यीशु मसीह ने क्रूस की मृत्यु का दुख उठाया था ताकि उसकी मौत के द्वारा हमारे पापों का प्रायश्चित हो जाए। इसीलिए, इस बात को बाइबल में एक सुसमाचार कहा गया है। क्योंकि इससे बड़ी और महान बात मनुष्यों के लिए और क्या हो सकती है, कि परमेश्वर हमारे लिए स्वर्ग को छोड़कर पृथ्वी पर आ गया था और उसने हमारे पापों के दण्ड को अपने ऊपर ले लिया था और हमारे पापों का प्रायश्चित करने को उसने स्वयं अपना ही लहू बहा दिया था।

मनुष्य को स्वर्ग में प्रवेश करने से केवल एक ही वस्तु रोकती है। और वह वस्तु है "पाप" लेकिन परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह ने हमारे पापों का दण्ड अपने ऊपर लेकर अपनी मृत्यु के द्वारा हमारे

पापों का प्रायश्चित कर दिया है। तो क्या इसका अर्थ यह हुआ कि अब हम अपने पापों का दण्ड नहीं पाएंगे ? क्या अब हम पाप से छुटकारा पाकर मुक्त हो गए हैं ? पवित्र बाइबल में लिखा है कि उद्धार परमेश्वर का वरदान है, जिसे हम अपने कामों से नहीं परन्तु परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा प्राप्त करते हैं। "सो हम क्या कहें ?" बाइबल का लेखक कहता है, "क्या हम पाप करते रहें, कि अनुग्रह बहुत हो ? कदापि नहीं ! हम जबकि पाप के लिए मर गए तो फिर आगे को उसमें क्योंकर जीवन बिताएँ ? और क्या तुम नहीं जानते कि हम में से जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, तो उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया ? सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें। क्योंकि यदि हम उसकी मृत्यु की समानता में उसके साथ जुट गए हैं, तो निश्चय उसके जी उठने की समानता में भी जुट जाएंगे। क्योंकि हम जानते हैं कि हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया, ताकि पाप का शरीर व्यर्थ हो जाएं, ताकि 'हम आगे को पाप के दासत्व में न रहें।" (रोमियों ६:१, ६)।

नरक से बचकर स्वर्ग में प्रवेश करने का अवसर हमें देने के लिए परमेश्वर हमारे लिए मनुष्य बन गया; उसने हमारे दण्ड को स्वयं अपने ऊपर उठा लिया। उसने अपना खून बहाकर हमारे पापों का प्रायश्चित कर दिया। और अब वह हमसे यह चाहता है कि हम में से हर एक उसके पुत्र यीशु मसीह में यह विश्वास लाए कि वह मेरे (हमारे) पापों के बदले में मारा गया था; और हम में से प्रत्येक अपने-अपने पापों से अपना मन फिराए; और हम में से हरएक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए पानी में गाड़े जाकर बपतिस्मा ले, और फिर हम सब एक नए जीवन की चाल चलें, अर्थात अपना जीवन प्रभु यीशु मसीह के आदर्शों पर चलकर व्यतीत करें।

पाप से छुटकारा पाकर परमेश्वर के स्वर्ग में प्रवेश करने के योग्य बनने के लिए आवश्यक है कि हर एक इंसान परमेश्वर के निर्धारित उन नियमों का पालन करे जिन्हें उसने ठहराया है। हम अपनी इच्छा से कुछ भी करके स्वर्ग में प्रवेश नहीं कर सकते। परन्तु यदि हम अपने आप को स्वर्ग में प्रवेश करने के योग्य बनाना चाहते हैं, तो आवश्यक है कि हम यीशु मसीह में अपने सारे मन से विश्वास लाएं। और फिर प्रत्येक पाप से अपना मन फिराएँ अर्थात् यह निश्चय करें कि अब आगे को हम अपना जीवन पाप में नहीं बिताएंगे। और फिर अपने पुराने और पाप के मनुष्यत्व को एक मरे हुए व्यक्ति की तरह बपतिस्मा लेकर जल की कब्र के भीतर हमेशा के लिए दफ़ना दें। और तब उस नए जीवन की चाल चलें जो हमें प्रभु यीशु मसीह से मिलता है। इसके अतिरिक्त स्वर्ग में प्रवेश करने का और कोई साधन है ही नहीं, और यह वह उपाय है, जिसे स्वयं परमेश्वर ने मनुष्यों के लिए ठहराया है। परमेश्वर का केवल एक ही मार्ग है, जैसे कि स्वयं परमेश्वर भी केवल एक ही है। और मनुष्यों के लिए उद्धार का और स्वर्ग में प्रवेश करने का परमेश्वर द्वारा नियुक्त वह मार्ग है उसका पुत्र, प्रभु यीशु मसीह, जो सारे जगत के पापों का प्रायश्चित है और जिसने स्वयं यह कहा था : कि मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूँ और बिना मेरे द्वारा कोई परमेश्वर के पास नहीं जा सकता।

मसीह का अद्‌भुत सुसमाचार

इस प्रोग्राम में हम प्रभु यीशु मसीह के बारे में देखते हैं। हमारा यह पूरा विश्वास है कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है। और आज से लगभग दो हज़ार वर्ष पूर्व जब वह स्वर्ग से इस पृथ्वी पर आया था, तो उसने अपने आप को सारे जगत के पापों का प्रायश्चित करने को बलिदान कर दिया था। वह परमेश्वर की ओर से जगत का उद्धार करने को आया था। वह परमेश्वर द्वारा नियुक्त मार्ग और सच्चाई और अनन्त जीवन का स्रोत है, जिसके द्वारा प्रत्येक व्यक्ति अपने पापों से मुक्ति प्राप्त करके परमेश्वर के स्वर्ग में प्रवेश करने की आशा प्राप्त कर सकता है। बाइबल, अर्थात परमेश्वर के वचन की पुस्तक, जिसमें हमें प्रभु यीशु मसीह के बारे में मिलता है, हमें यह भी बताती है कि परमेश्वर ने प्रत्येक मनुष्य के लिए केवल एक बार मरना और उसके बाद न्याय का सामना करना नियुक्त किया है। यानी हर एक मनुष्य इस ज़मीन पर केवल एक बार जन्म लेता है और मृत्यु के कारण जब वह इस संसार से चला जाता है तो फिर वह किसी भी रूप में कभी भी इस जगत में वापस नहीं आता है। इसलिए आपका वर्तमान जीवन बड़ा ही बहूमूल्य है। क्योंकि इसी जीवन में समय के रहते, आपको यह चुनाव करना है कि क्या आप अपनी मर्ज़ी से अपने जीवन को इस पृथ्वी पर निर्वाह करके अपने जीवन का अन्त करेंगे। या फिर क्या आप परमेश्वर की इच्छा पर चलकर अपने जीवन को व्यतीत करेंगे।

परमेश्वर केवल एक है। वह परमेश्वर शारीरिक या भौतिक नहीं है। उसी ने हम सबको बनाया है। वह हम सब का और सारे जगत का सृष्टिकर्त्ता है। वह परमआत्मा है। उसने मनुष्य को अपने स्वरूप पर बनाया है। अर्थात् प्रत्येक मनुष्य एक आत्मिक प्राणी है। और क्योंकि वह आत्मिक है, इसलिए वह परमेश्वर की ही तरह अमर है। यानी आत्मिक दृष्टिकोण से प्रत्येक मनुष्य सदा वर्तमान रहेगा। मृत्यु

एक ऐसा साधन है जिसके द्वारा मनुष्य अपनी देह से अलग होकर उस आत्मिक लोक में प्रवेश करता है, जिसमें जाने के लिए मनुष्य ने अपने आप को तैयार किया है।

परमेश्वर के वचन की पुस्तक, पवित्र बाइबल में लिखा है कि आरम्भ में परमेश्वर ने मनुष्य को अपनी ही तरह पवित्र बनाया था। किन्तु मनुष्य ने अपने जीवन में परमेश्वर की इच्छा को नहीं अपनाया था। वह आत्मा की इच्छा पर न चलकर अपने शरीर की इच्छा से चलने लगा था। वह अपनी शारीरिक अभिलाषाओं में पड़कर परमेश्वर से दूर हो गया था।

लेकिन परमेश्वर ने मनुष्य को अपने पास अपनी संगति में वापस लौट आने का एक मार्ग प्रदान किया है। और परमेश्वर का वही मार्ग प्रभु यीशु मसीह है। बाइबल में लिखा है, कि परमेश्वर केवल एक ही है और परमेश्वर तथा मनुष्यों के बीच में एक ही बिचवई है अर्थात् यीशु मसीह। प्रत्येक मनुष्य स्वयं अपने ही पापों के कारण परमेश्वर से दूर है। और इसका अर्थ यह है कि जब मनुष्य अपने पार्थिव शरीर को इस पृथ्वी पर छोड़कर आत्मिक लोक में जाएगा, तो वहां वह हमेशा के लिए परमेश्वर से दूर होकर रहेगा। बाइबल में इस बात को अनन्त मृत्यु कहकर सम्बोधित किया गया है। यानी इंसान के लिए यह हमेशा की मौत है। और हमेशा की इसी मृत्यु को नरक कहकर सम्बोधित किया गया है।

किन्तु हमारा परमेश्वर, हम सबका सृष्टिकर्ता, हमारा स्वर्गीय पिता ऐसा नहीं चाहता कि हम में से कोई भी अनन्त मृत्यु और नरक का सामना करे। इसीलिए उसने अपने सामर्थी वचन को एक मनुष्य के रूप में इस पृथ्वी पर इस जगत में भेज दिया। परमेश्वर का सामर्थी वचन परमेश्वर का एकलौता पुत्र था। वह किसी मनुष्य की इच्छा से नहीं परन्तु परमेश्वर की सामर्थ से इस जगत में आया था। इसीलिए बाइबल में लिखा है कि उसका जन्म एक कुवांरी से हुआ था। उसका जीवन बड़ा ही अद्‌भुत था। उसने परमेश्वर की

सामर्थ से बड़े-बड़े आश्चर्य के काम किये थे। उसने अनेकों महत्वपूर्ण शिक्षाएँ और पाठ दिये थे। किन्तु फिर वह परमेश्वर की इच्छा से कुछ लोगों की ईर्ष्या का निशाना बनाया गया था। उस पर झूठे दोष लगाए गए थे। और उन्हीं के आधार पर उसे क्रूस पर मरने की सज़ा दी गई थी। परन्तु यह सब कुछ परमेश्वर के होनहार के ज्ञान के अनुसार और उसकी योजना के अनुसार था। स्वयं प्रभु यीशु ने अपनी मृत्यु से पहले कहा था, कि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास लाए वह नाश न हो परन्तु अनन्त जीवन पाए। (यूहन्ना ३:१६)। बाइबल का लेखक कहता है कि किसी धर्मी जन के लिए कोई मरे, यह तो दुर्लभ है, परन्तु क्या जाने किसी भले मनुष्य के लिए कोई मरने का भी हियाव करे। परन्तु परमेश्वर ने अपने प्रेम की भलाई को जगत पर इस रीति से प्रदर्शित किया है कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिए मर गया। (रोमियों ५:७, ८)। बाइबल कहती है, कि यीशु मसीह, जो पाप से अज्ञात था उसी को परमेश्वर ने सारे जगत के लिए पाप ठहराया ताकि उसके कारण हम परमेश्वर के निकट धर्मी कहलाएं। (२ कुरिन्थियों ५:२१)। यीशु, बाइबल कहती है, सारी मानवता के पापों का प्रायश्चित है। और मित्रो, यही सुसमाचार है। जिसे हम सब को देने के लिए परमेश्वर ने अपनी पुस्तक बाइबल को लिखवाया है। परमेश्वर हमें बताना चाहता है कि पृथ्वी पर हमारे पास केवल एक ही जीवन है और इस जीवन के बाद हम उस आत्मिक लोक में प्रवेश करेंगे जहाँ से हम कभी भी वापस इस संसार में नहीं आएंगे। परमेश्वर, अपनी बाइबल के द्वारा हमें बताता है, कि हम सब पाप में हैं और पाप हम सबको नरक के अनन्त जीवन की ओर ले जा रहा है। लेकिन परमेश्वर हमें नरक के अनन्त विनाश से बचाना चाहता है। वह हमें स्वर्ग में अनन्त जीवन देना चाहता है। और वह अनन्त जीवन हमें उसके पुत्र यीशु मसीह में मिलता है, जो हमारे और सारे जगत के

पापों का प्रायश्चित है। जिसे परमेश्वर ने स्वर्ग से पृथ्वी पर हमारे पापों का प्रायश्चित करने को भेजा था।

यह कितनी अद्‌भुत और कैसी महान बात है ! जिस वस्तु को अर्थात् अपने पापों से उद्धार तथा मुक्ति को हम स्वयं अपने प्रयत्नों से प्राप्त नहीं कर सकते। उसी चीज़ को परमेश्वर ने हमें मुफ़्त में दान स्वरूप दे दिया है। लेकिन इस दान को हमें देने के लिए परमेश्वर को कैसा भारी दाम चुकाना पड़ा था। उसे स्वर्ग को छोड़कर पृथ्वी पर आना पड़ा था। उसे एक मनुष्य बनना पड़ा था। उसे मनुष्य के अपमान और निरादर का सामना करना पड़ा था। और जबकी वह मनुष्य के ही पापों के प्रायश्चित के लिए क्रूस पर चढ़ाकर मारा गया था, वही लोग, जिनके पापों के कारण वह बलि किया जा रहा था, उसका उपहास और ठट्ठा उड़ा रहे थे। और कह रहे थे कि इसने औरों को तो बचाया पर अब अपने आप को तो बचा ले ! किन्तु परमेश्वर का मेम्ना क्रूस पर भी अपने सतानेवालों के लिए यह प्रार्थना कर रहा था, कि परमेश्वर इन्हें क्षमा करना क्योंकि ये जानते नहीं कि ये क्या कर रहे हैं !

मित्रो ! परमेश्वर का ज्ञान अद्‌भूत है। उसके काम निराले हैं ! और उसका प्रेम महान् है ! बाइबल में लिखा है, कि जब कोई भी मनुष्य परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह में सारे मन से विश्वास लाता है और अपने पापों से मन मोड़कर जल में यीशु की आज्ञा मानकर बपतिस्मा लेता है तो परमेश्वर उस मनुष्य के सारे पापों को यीशु मसीह के कारण क्षमा कर देता है। बपतिस्मा लेने का अर्थ है पानी के भीतर, यीशु के अधिकार से गाड़ दिये जाना और उसमें से बाहर आना। बपतिस्मा लेना इस बात का प्रतीक है कि पाप करनेवाला मनुष्य मर चुका है, क्योंकि उसने पाप से अपना मन फिरा लिया है। और उस मरे हुए व्यक्ति को गाड़ा जा चुका है और जल में से बाहर निकला हुआ वह व्यक्ति एक नया जन्मा हुआ मनुष्य है। प्रभु यीशु ने कहा था, कि प्रत्येक मनुष्य को नए

सिरे से जन्म लेना आवश्यक है और जब तक कोई व्यक्ति जल और आत्मा से न जन्मेगा तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकेगा।

क्या आप परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना चाहते हैं ? क्या आप परमेश्वर के सुसमाचार पर विश्वास करते हैं ? क्या इन बातों के सम्बन्ध में हम आपकी कोई सहायता कर सकते हैं ? प्रभु यीशु मसीह में हम आपके सेवक हैं और हमारी केवल एक ही इच्छा है; जैसा कि परमेश्वर भी चाहता है, और वह यह है, कि आप परमेश्वर के उद्धार से वंचित न रह जाएं।

मृत्यु और पुनरूत्थान का सुसमाचार

मसीह के सुसमाचार की बातों को आप के सम्मुख रखने के इस सुन्दर अवसर को पाकर मैं सचमुच में बड़ा ही प्रसन्न हूँ। मसीह का सुसमाचार उसकी मृत्यु है। मृत्यु अकसर शोक और अफ़सोस को पैदा करती है। किन्तु परमेश्वर ने हमारे लिए मृत्यु को ही एक सुसमाचार के रूप में बदल डाला। उसने अपने सामर्थी वचन को एक मनुष्य के रूप में अपना पुत्र बनाकर, इस पृथ्वी पर भेज दिया। और उसी को मनुष्यों के हाथों से एक क्रूस पर चढ़वाकर मृत्यु का दण्ड दिलवाया। पवित्र बाइबल में लिखा है, कि परमेश्वर ने सारी मानवता के लिए अपने विशाल प्रेम को इस रीति से प्रकट किया है कि जब हम सब पापी ही थे तो मसीह यीशु हमारे लिए मर गया। (रोमियों ५:८)। और एक अन्य जगह लिखा है, कि वह जो पाप से अज्ञात था, उसी को लेकर परमेश्वर ने हमारे लिए पाप ठहराया, ताकि हम सब उसमें होकर उसके द्वारा परमेश्वर के निकट धर्मी बन जाएँ। (२ कुरिन्थियों ५:२१)। प्रभु यीशु मसीह का सुसमाचार यह है कि वह सारे जगत के पापों का प्रायश्चित है। वह इस पृथ्वी पर कुछ खास लोगों के लिए या किसी एक विशेष धर्म के लोगों के लिए नहीं आया था। परन्तु वह सारी मानवता के लिए आया था। उसने क्रूस पर अपना लोहू संसार के प्रत्येक व्यक्ति के पापों को धो डालने के लिए बहाया था। वह सारे जगत के सब लोगों को पाप से मुक्ति देने को आया था। और इसीलिए वह परमेश्वर की इच्छा तथा मनसा से क्रूस पर चढ़ाया गया था।

परन्तु मसीह का सुसमाचार उसके पुनरूत्थान के बिना अधूरा है। क्योंकि यदि मसीह मरने के बाद फिर से न जी उठता तो वह हमारा मुक्तिदाता और उद्धारकर्त्ता आज कैसे हो सकता था ?

क्योंकि कोई मरा हुआ व्यक्ति किसी को नहीं बचा सकता। केवल एक ज़िन्दा व्यक्ति ही किसी को बचा सकता है।

बाइबल में लिखा है, कि प्रभु यीशु ने अपनी मृत्यु से पूर्व यह घोषणा की थी कि वह अपनी मृत्यु के बाद तीसरे दिन फिर से जी उठेगा। यह बात न केवल उसके चेलों को ही पर अन्य सब लोगों को भी मालूम् थी। इसीलिए बाइबल में हम पढ़ते हैं कि यीशु की मृत्यु के बाद जब कुछ लोगों ने उसकी लाश को क्रूस पर से उतारकर चट्टान के भीतर खुदी एक कब्र में रखकर उस कब्र का मुँह एक बड़े पत्थर से बन्द कर दिया था। तो यहूदियों के महायाजकों और फरीसियों ने पीलातुस के पास आकर उससे कहा था कि हे महाराज हमें याद है कि उस भरमानेवाले ने अपने जीते जी कहा था कि मैं तीन दिन के बाद जी उठूगा। सो हमारा निवेदन है कि आज्ञा दी जाए की तीसरे दिन तक उस कब्र की रखवाली की जाए। कहीं ऐसा न हो कि उसके चेले आकर उसकी लाश को चुरा ले जाएं और लोगों को कहने लगें कि वह मरे हुओं में से जी उठा है। और यदि ऐसा हुआ तो पिछला धोखा पहले से भी बुरा होगा। इस पर लिखा है कि पीलातुस ने उनसे कहा कि तुम्हारे पास सिपाही तो हैं, जाओ अपनी समझ के अनुसार रखवाली करो। सो वे लोग सिपाहियों को कब्र पर ले गए और कब्र पर रखे पत्थर पर राजा की मोहर लगाकर उसे चारों तरफ से सील कर दिया और कब्र पर पहरेदारों को बैठा दिया कि वे तीसरे दिन तक उस कब्र की रखवाली करें। (मत्ती २७:५७-६६)।

लेकिन, इन सब बातों के बावजूद भी वह चट्टानी कब्र और रोमी राज्य के शक्तिशाली सिपाही यीशु के पुनरूत्थान को नहीं रोक सके। क्योंकि हम बाइबल में पढ़ते हैं, कि "सब्त के दिन के बाद सप्ताह के पहले दिन (यानि ऐतवार को) पह फटते ही मरियम मगदलीनी और दूसरी मरियम कब्र को देखने आई। और देखो एक बड़ा भुईडोल हुआ क्योंकि प्रभु का एक दूत स्वर्ग से उतरा और

पास आकर उसने पत्थर को लुढ़का दिया और उस पर बैठ गया। उसका रूप बिजली का सा और उसका वस्त्र पाले की नाई उज्जवल था। उसके भय से पहरूए कांप उठे और मृत्क समान हो गए। उस स्वर्गदूत ने स्त्रियों से कहा, कि तुम मत डरो मैं जानता हूँ कि तुम यीशु को, जो क्रूस पर चढ़ाया गया था ढूंढती हो। पर वह यहाँ नहीं है, परन्तु अपने वचन के अनुसार जी उठा है, आओ, यह स्थान देखो जहाँ प्रभु पड़ा था। और शीघ्र जाकर उसके चेलों से कहो, कि वह मृतकों में से जी उठा है।'' (मत्ती २८:१-७)।

यीशु वास्तव में मृतकों में से जी उठा था। क्योंकि यदि ऐसा न होता तो यहूदी और रोमी जो यीशु के शत्रु थे, तीसरे दिन उसकी लाश को कब्र में से निकालकर लोगों के सामने प्रस्तुत कर सकते थे। और इस प्रकार वे हमेशा के लिए यीशु के इस दावे को गलत साबित कर सकते थे कि 'मैं तीसरे दिन फिर से जी उठूंगा।' और यदि ऐसा हो जाता तो आज मसीहीयत नाम की कोई चीज़ भी इस जगत में नहीं होती। कोई यह जानता तक भी नहीं कि मसीह यीशु कौन था। लेकिन क्योंकि यीशु वास्तव में मुर्दों में से जी उठा था और स्वर्ग में वापस जाने से पहले वह इस पृथ्वी पर चालीस दिनों तक रहा था। इसलिए उसके चुने हुए चेलों को उसकी मृत्यु और उसके जी उठने का प्रचार करने से कोई नहीं रोक सका। और उनके प्रचार के भीतर इतनी ताकत थी की प्रतिदिन सैंकड़ों और हज़ारों लोग अपना-अपना मन फिराकर प्रभु यीशु के अनुयायी बनते जा रहे थे। यद्यपि रोमियों और यहूदियों ने यह कोशिश तो की थी कि वे लोगों में यह बात फैलाएं कि यीशु के चेले उसकी लाश को कब्र में से चुराकर ले गए थे। लेकिन कोई भी इस बात को मानने को तैयार नहीं था। क्योंकि कब्र को तो मोहरबन्द किया गया था। उसके ऊपर एक बड़ा भारी पत्थर रखा गया था। और उस कब्र की रखवाली के लिए पहरेदारों को नियुक्त किया गया था। और न ही लोग इस बात को मानने को तैयार थे कि यीशु वास्तव

में क्रूस पर मरा नहीं था। और जब कब्र के भीतर उसे होश आया था तो वह बाहर आ गया था। क्योंकि यह बात भी असम्भव थी। यीशु की पसली में, जब वह क्रूस पर मर गया था, भाला मारा गया था, और खून और पानी उसके शरीर में से बाहर निकला था। तौभी यदि तर्क के दृष्टिकोण से यह मान भी लिया जाए कि वह क्रूस पर पूरी तरह से मरा नहीं था, तौभी यह कैसे हो सकता है कि एक अधमरा और ज़ख्मी और भूखा प्यासा इंसान होश आते ही तीसरे दिन कब्र के मुँह पर रखा एक भारी पत्थर अपने आप हटा ले और फिर वहां पर बैठे पहरेदारों की नज़रों से बचकर वहां से भाग जाएँ !!

यीशु का मुर्दों में से जी उठना उसके चेलों के लिए एक बहुत बड़ा सुसमाचार था। वे जो यीशु की मृत्यु के बाद रोमियों और यहूदियों के डर से इधर-उधर जा छिपे थे। उन्होंने अब सब जगह जा-जाकर यीशु की मृत्यु और उसके जी उठने के सुसमाचार का प्रचार किया। और यहाँ तक कि जब उन्हें पकड़कर अधिकारियों के सामने लाया जाता और वे अधिकारी उनसे कहते, "कि क्या हमने तुम्हें चिताकर आज्ञा नहीं दी थी, कि तुम अब इस नाम से उपदेश न करना ? तौभी देखो तुमने सारे यरूशलेम को अपने उपदेश से भर दिया है और उस व्यक्ति का लोहू हमारी गर्दन पर लाना चाहते हो।" तो उन सब का एक यही जवाब होता था, "कि क्या यह परमेश्वर के निकट भला है कि हम परमेश्वर की बात से बढ़कर तुम्हारी बात मानें ? क्योंकि यह तो हमसे हो नहीं सकता, कि जो हमने देखा है और सुना है, वह न कहें।" क्योंकि, "मनुष्यों की आज्ञा से बढ़कर परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना ही हमारा कर्त्तव्यकर्म है।" (प्रेरितों ४:१८-२०; ५:२८-२९)।

सबसे पहली बार यीशु के चेलों ने जब यहूदियों के एक विशाल जन-समूह को मसीह की मौत और उसके पुनरूत्थान का प्रचार किया था तो उन्होंने उनसे यूँ कहा था, कि 'हे इसराएलियो, ये बातें सुनो : कि यीशु नासरी एक मनुष्य था, जिसका परमेश्वर की

ओर से होने का प्रमाण उन सामर्थ के कामों और आश्चर्य के कामों और चिन्हों से प्रकट है जो परमेश्वर ने तुम्हारे बीच उसके द्वारा कर दिखाए जिसे तुम आप ही जानते हो। उसी को, जब वह परमेश्वर की ठहराई हुई मनसा और होनहार के ज्ञान के अनुसार पकड़वाया गया, तो तुमने अधर्मियों के हाथों से उसे क्रूस पर चढ़ाकर मार डाला। परन्तु उसी को परमेश्वर ने मृत्यु के बन्धनों से छुड़ाकर जिलाया क्योंकि यह अनहोना था कि वह उसके वश में रहता।''

और, मित्रो, आज भी हम सब के लिए परमेश्वर का एक यही सुसमाचार है कि यीशु मसीह परमेश्वर की इच्छा से जगत के पापों का प्रायश्चित करने को मारा गया था और उसकी ही सामर्थ से वह फिर से जिलाया गया था। और जब हम उस में विश्वास लाते हैं और उसकी आज्ञा को मानते हैं तो हमें उसके द्वारा अपने पापों से मुक्ति मिलती है और हम परमेश्वर के संतान बन जाते हैं।

यीशु का अद्‌भुत व्यक्तित्व

सत्य सुसमाचार के इस कार्यक्रम में हम बाइबल की शिक्षाओं पर विचार करते हैं। बाइबल हमें परमेश्वर और उसके पुत्र यीशु मसीह के बारे में बताती है। जब हम प्रभु यीशु मसीह पर विचार करते हैं तो अक्सर हमारा ध्यान उसके सामर्थपूर्ण जीवन तथा कामों पर जाता है। यूहन्ना नाम का यीशु का एक चेला यीशु के जीवन के वृत्तांत को अपनी पुस्तक में लिखकर अन्त में यूं कहता है कि "और भी बहुत से काम हैं, जो यीशु ने किए यदि वे एक-एक करके लिखे जाते तो मैं समझता हूँ कि पुस्तकें जो लिखी जातीं वे जगत में भी न समातीं।'' (यूहन्ना २१:२५)।

निसन्देह, यीशु ने अनेकों सामर्थपूर्ण काम इस पृथ्वी पर लोगों

के सामने किए थे। पर कुछ बड़े ही महत्वपूर्ण और शक्तिशाली तथा अद्‌भुत काम परमेश्वर ने स्वयं यीशु के ही ऊपर किये थे। और उनमें से सबसे पहला अद्‌भुत काम था। स्वयं यीशु का पृथ्वी पर जन्म लेना ! यदि यीशु परमेश्वर का पुत्र था, जैसे कि बाइबल में लिखा है, तो अवश्य था कि उसका जन्म सभी अन्य मनुष्यों से भिन्न होता। और यही बात हमं बाइबल में यीशु के जन्म' के बारे में देखते हैं। बाइबल के नए नियम की पुस्तकों में सबसे पहले हम प्रभु यीशु मसीह के जन्म के बारे में पढ़ते हैं। बाइबल हमें बताती है कि उसका जन्म परमेश्वर की सामर्थ से हुआ था। किन्तु इससे पहले कि यीशु का जन्म होता, परमेश्वर ने अपने एक दूत को गलील के नासरत नगर में एक भक्त कन्या के पास भेजा था। परमेश्वर के स्वर्गदूत ने मरियम नाम की उस कुंवारी से कहा था : "कि तू डर मत क्योंकि परमेश्वर का अनुग्रह तुझ पर हुआ है। तू पवित्रात्मा की सामर्थ से गर्भवती होगी और तेरे एक पुत्र उत्पन्न होगा और तू उसका नाम यीशु रखना; और वह महान होगा और वह परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा और वह लोगों का उनके पापों से उद्धार करेगा।" प्रभु यीशु मसीह के अद्‌भुत जन्म की कहानी को हम बाइबल में मत्ती की पुस्तक के एक तथा दो अध्यायों में पढ़ते हैं। यीशु का इस प्रकार अद्‌भुत जन्म लेना इस बात का प्रमाण है। कि वह कोई मनुष्य मात्र नहीं था परन्तु वास्तव में परमेश्वर का पुत्र था।

इससे पहले कि यीशु का पृथ्वी पर जन्म होता, बाइबल में यीशु को "वचन" कहकर सम्बोधित किया गया है। उसके बारे में लिखा है कि "आदि में वचन था और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था ..... और वचन देहधारी हुआ, और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हमने उसकी ऐसी महिमा देखी जैसी पिता के एकलौते की महिमा।" (यूहन्ना १:१, १४)। और फिर लिखा है कि उसने "परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा।

वरन अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया और दास का स्वरूप धारण किया और मनुष्य की समानता में हो गया और मनुष्य के रूप में प्रकट होकर अपने आप को दीन किया और यहां तक आज्ञाकारी रहा कि मृत्यु, हां, क्रूस की मृत्यु भी सह ली।'' (फिलिप्पियों २:६-८)।

क्रूस पर यीशु की मृत्यु परमेश्वर का एक और महान् तथा अद्‌भूत कार्य था। जब हम यीशु मसीह के व्यक्तित्व पर विचार करते हैं, तो हम देखते हैं कि उसका व्यक्तित्व बड़ा ही महान था। वह आंधी और तूफ़ान को डांटकर थाम देता था। वह कब्र में गाड़े हुए मुर्दों को ज़िन्दा करके बाहर निकालकर खड़ा कर देता था। वह दो-चार रोटियों को हाथ में लेकर उनपर ऐसी आशीष दे देता था कि हज़ारों लोग उन्हें खाकर तृप्त हो जाते थे। अंगहीन और विकलांग लोग उसे छूकर तुरन्त चंगे हो जाते थे। पर जब उसकी मौत का वक्त पास आया था, तो उसने अपने आप को एक बलि के मेम्ने के समान उन लोगों के हवाले कर दिया था, जो उसे पकड़कर क्रूस पर चढ़ाना चाहते थे। और जब उसके चेलों ने उसे बचाना चाहा था तो उसने उनसे कहा था, कि क्या तुम नहीं चाहते कि मैं उस प्याले में से पीऊँ जिसे मेरे पिता ने मुझे दिया है ?

उस समय, यदि प्रभु चाहता तो उन सबको पत्थर की मूर्त्तियाँ बना देता। और यदि वह चाहता तो वह उन सैबको अंधा कर सकता था। वह अपनी सामर्थ से अपने उन शत्रुओं का कुछ भी कर सकता था। पर उसने उनकी कोई हानि नहीं की। क्योंकि वह जानता था कि उसकी मौत ही लोगों को ज़िन्दगी दे सकती है। पृथ्वी पर तो वह मात्र उसी उद्देश्य को लेकर आया था। उसने अपनी मृत्यु से पूर्व अनेकों बड़े-बड़े सामर्थ के काम किए थे। पर वे सब काम तो उसने केवल इसलिए किये थे ताकि उन कामों को देखकर उसके चेले और सब लोग उसमें यह विश्वास लाएं कि वह वास्तव में परमेश्वर का एकलौता पुत्र है।

यीशु के अद्‌भुत जन्म के समान ही उसकी मृत्यु भी परमेश्वर

का एक बहुत विशाल कार्य था। बाइबल का एक लेखक इसी बात की ओर संकेत करके एक जगह इस प्रकार कहता है, "क्योंकि क्रूस की कथा नाश होनेवालों के निकट तो मूर्खता है पर हम उद्धार पानेवालों के निकट परमेश्वर की सामर्थ है।" (१ कुरिन्थियों १:१८)।

क्रूस पर लटकी यीशु की लोहू-लुहान मरी हुई देह के भीतर परमेश्वर की सामर्थ छिपी हुई थी। जिस प्रकार से प्रभु यीशु ने स्वयं अपने जीते जी कहा था कि "जब तक गेहूँ का दाना भूमि में पड़कर मर नहीं जाता वह अकेला रहता है, परन्तु जब मर जाता है, तो बहुत फल लाता है।" (यूहन्ना १२:२४)। एक सूखा हुआ गेहूँ का दाना भूमि के भीतर गाड़ा जाता है। मिट्टी में मिलकर उसका अस्तित्व मिट जाता है। पर वह परमेश्वर की सामर्थ से एक नए अस्तित्व के साथ भूमि के भीतर से बाहर आता है। और फिर उसी से अनेकों अन्य नए दानों का जन्म होता है। ठीक ऐसी ही थी यीशु की मृत्यु भी। उसकी मौत के भीतर अनेकों ज़िंदगियाँ कैद थीं। क्योंकि यदि वह परमेश्वर की योजनानुसार पापियों के लिए क्रूस पर न मरता, तो जगत के पापों का प्रायश्चित किस प्रकार होता ? और यदि हमारे पापों का प्रायश्चित न किया गया होता तो हमारे पास आज क्या आशा होती ? लेकिन आज मैं बड़े ही साहस और निश्चय के साथ यह कह सकता हूँ कि यदि आज ही इस संसार से मैं चला जाऊँ तो मैं परमेश्वर के पास उसके स्वर्ग में जाऊँगा जहां मैं अनन्त जीवन पाऊँगा, क्योंकि मैं जानता हूँ कि प्रभु यीशु मसीह ने क्रूस पर अपनी मृत्यु के द्वारा मेरे पापों का प्रायश्चित कर दिया है। और मैं अपने सारे मन से उस में विश्वास करता हूँ कि उसने मेरे सब पापों को क्षमा किया है। क्योंकि मैंने उसकी आज्ञा मानकर अपना मन फिराया है और अपने पापों की क्षमा पाने के लिए बपतिस्मा लिया है। और अब मैं प्रयत्नशील हूँ कि मैं अपना प्रतिदिन का जीवन उसकी आज्ञाओं तथा शिक्षाओं पर चलकर व्यतीत करूं। और मित्रो, यही महान आशा आप के पास भी हो सकती है यदि आप यीशु मसीह में विश्वास लाकर और उसकी आज्ञाओं

को मानकर अपने जीवनों को आज उसे सौंप देंगे।

प्रभु यीशु मसीह हमारा ज़िन्दा उद्धारकर्त्ता है। वह हमारे लिए क्रूस पर मरा ज़रूर था, और उसकी लाश को एक कब्र में गाड़ा भी गया था, पर यह अनहोनी बात थी कि सारे जगत को बनानेवाला और ज़ीवन देनेवाला प्रभु उस कब्र में ही दफ़न रहता। प्रभु यीशु मसीह का यह दावा था कि अपनी मौत के बाद तीसरे दिन वह फिर जी उठेगा। और यद्यपि उसके शत्रुओं ने उसकी कब्र को सील कर दिया था और उस पर कड़ा पहरा भी बैठा दिया था। किन्तु परमेश्वर के पुत्र को संसार की कोई भी ताकत कब्र के भीतर क़ैद न रख सकी थी। तीसरे दिन वह कब्र से बाहर था। और कब्रस्थान स्वर्गदूत के इन शब्दों से गूंज रहा था, कि "वह यहां नहीं है, वह अपने कहे अनुसार जी उठा है।" बाइबल हमें बताती है कि मुर्दों में से जी उठने के बाद यीशु चालीस दिनों तक पृथ्वी पर रहा था और उसे सैंकड़ों लोगों ने देखा था, और फिर वह अपने चेलों को एक अन्तिम आदेश देकर स्वर्ग पर वापस चला गया था प्रभु यीशु मसीह ने अपने चेलों को जो अन्तिम आदेश दिया था वह यह था: "तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो। जो विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।" (मरकुस १६:१५, १६)।

मित्रो, मैंने आपको परमेश्वर का सुसमाचार सुनाया है और अब यह आपका कर्त्तव्य है कि आप इस पर विश्वास करें और इसे मानें। और मेरा विश्वास है कि आप परमेश्वर के सुसमाचार को अवश्य ही मानेंगे और अपना जीवन उसे दे देंगे ताकि आपका जीवन वैसा ही हो जाए जैसा कि वह चाहता था।

यीशु क्रूस पर क्यों चढ़ाया गया था ?

जब भी हम बाइबल में से सुनते या पढ़ते हैं तो हम उन बातों को सुनते और पढ़ते हैं जिन्हें परमेश्वर हमें बताना चाहता है। क्योंकि बाइबल परमेश्वर के वचन की किताब है। इस पुस्तक को परमेश्वर ने मनुष्यों के हाथों से अपनी प्रेरणा के द्वारा लिखवाया था। बाइबल हमें हमारे परमेश्वर अर्थात् हमारे सृष्टिकर्त्ता के बारे में बताती है। और बाइबल हमें हमारे उद्धारकर्त्ता प्रभु यीशु मसीह के बारे में बताती है। जब कभी भी हम प्रभु यीशु मसीह के बारे में विचार करते हैं तो हमारा ध्यान एक दम क्रूस की ओर जाता है। क्रूस और मसीह और मसीह और क्रूस मानो एक साथ गुथे हुए हैं। जब हम मसीह के बारे में सोचते हैं तो हम क्रूस के बारे में सोचते हैं। और जब हम क्रूस पर विचार करते हैं तो हमारा ध्यान उसी समय मसीह पर जाता है। इस पृथ्वी पर प्रभु यीशु मसीह के आने का उद्देश्य ही क्रूस के साथ जुड़ा हुआ था। क्रूस उसका उद्देश्य था। क्रूस उसका ध्येय था। और क्रूस उसका आनन्द था। उसकी शिक्षाओं में क्रूस का एक महत्वपूर्ण स्थान था। उसके ये शब्द आज भी हम उसके नए नियम में पढ़ते हैं कि, "जो अपना क्रूस लेकर मेरे पीछे न चले वह मेरे योग्य नहीं।" (मत्ती १०:३८)। और "यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आपे से इन्कार करे और प्रतिदिन अपना क्रूस उठाए हुए मेरे पीछे हो ले।" (लूका ९:२३)।

पर क्रूस का दूसरा नाम था मौत ! क्योंकि क्रूस के ऊपर चढ़ाकर लोगों को मौत की सज़ा दी जाती थी। क्रूस लकड़ी के दो मज़बूत और लम्बे लट्ठों से बना होता था। और उसका आकार अंग्रेज़ी के "टी" अक्षर का सा होता था। जिस किसी व्यक्ति को क्रूस

पर चढ़ाया जाता था उसे पहले अदालत में मुजरिम ठहराया जाता था। और उसके बाद उसे कोड़ों से पीटा जाता था। और फिर उस व्यक्ति को विवश किया जाता था कि वह उस क्रूस को उठाकर उस स्थान तक ले जाए जहाँ लोगों को क्रूस पर चढ़ाया जाता था। उस स्थान को "खोपड़ी" कहकर सम्बोधित किया जाता था, शायद इसलिए, क्योंकि वहां क्रूस पर मारे गए लोगों की खोपड़ियाँ पड़ी रहती थीं। खोपड़ी के स्थान पर पहुँचकर दोषी व्यक्ति को उस क्रूस पर लिटा दिया जाता था और उससे बांधकर उसे कीलों से ठोंक दिया जाता था। फिर उसका दोषपत्र क्रूस के ऊपरी भाग पर लगाकर उस भारी क्रूस को खड़ा कर दिया जाता था। जहां उस व्यक्ति को मरने के लिए छोड़ दिया जाता था।

और बाइबल हमें बताती है कि ठीक ऐसी ही क्रूस की मौत की सज़ा यीशु मसीह को भी दी गई थी। पर यीशु मसीह को क्रूस की मौत की सज़ा क्यों दी गई थी ? जो बाइबल हमें यह बताती है कि आज से लगभग दो हज़ार वर्ष पूर्व मसीह को क्रूस पर चढ़ाया गया था, उसी बाइबल में एक जगह हम इस प्रकार पढ़ते हैं कि "यदि तुमने अपराध करके घूसे खाए और धीरज धरा तो इसमें क्या बड़ाई की बात है ? पर यदि भला काम करके दुख उठाते हो और धीरज धरते हो, तो यह परमेश्वर को भाता है। और तुम इसी के लिए बुलाए भी गए हो क्योंकि मसीह भी तुम्हारे लिए दुख उठाकर तुम्हें एक आदर्श दे गया है, कि तुम भी उसके चिन्ह पर चलो न तो उसने कोई पाप किया, और न उसके मुंह से छल की कोई बात निकली। वह गाली सुनकर गाली नहीं देता था और दुख उठाकर किसी को भी धमकी नहीं देता था, पर अपने आप को सच्चे न्यायी (अर्थात परमेश्वर) के हाथ में सौंपता था। वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिए हुए क्रूस पर चढ़ गया जिससे हम पापों के लिए मर करके धार्मिकता के लिए जीवन बिताएं।"

सो इस प्रकार, बाइबल से हम यह सीखते हैं, कि यीशु मसीह को मानवता के पापों के कारण क्रूस पर चढ़ाया गया था। और वास्तव

में, यदि पाप जगत में न होता तो प्रभु यीशु मसीह को स्वर्ग से इस पृथ्वी पर आने की कोई आवश्यकता ही नहीं थी। क्योंकि वह इस जगत में क्रूस पर की अपनी मृत्यु के द्वारा सारे पापियों के पापों का प्रायश्चित करने को आया था। पाप की मजदूरी, बाइबल कहती है, मृत्यु है और इस मृत्यु का तात्पर्य शारीरिक मृत्यु से नहीं है क्योंकि शारीरिक मृत्यु का सामना तो उन छोटे मासूम बच्चों को भी करना पड़ता है जो पाप को जानते भी नहीं। किन्तु, पाप की मजदूरी वह मृत्यु है जिसके कारण मनुष्य सदा के लिए परमेश्वर से दूर होकर उस स्थान पर रहेगा जिसे बाइबल में नरक तथा आग की एक भयानक झील कहकर सम्बोधित किया गया है। किन्तु, हमारा परमेश्वर नहीं चाहता कि हममें से कोई भी उस मृत्यु का सामना करे। इसीलिए उसने हमारे पापों का प्रायश्चित करने के लिए अपने एकलौते पुत्र यीशु मसीह को इस जगत में भेजा था।

आज से लगभग दो हज़ार वर्ष पूर्व जब यीशु ने जन्म लिया था तो उसका जन्म पलस्तीन देश में उन इंसराएली अर्थात् यहूदी लोगों के बीच में हुआ था जो इब्राहीम के वंश से थे। इब्राहीम से परमेश्वर ने हज़ारों वर्ष पूर्व यह प्रतिज्ञा की थी कि मैं तेरे वंश के द्वारा पृथ्वी के सारे लोगों को आशीषित करूंगा। उन्हीं लोगों को अर्थात् जो इब्राहीम के वंश से थे, परमेश्वर ने अपनी व्यवस्था भी दी थी, जिसे आज हम बाइबल का पुराना नियम कहते हैं। लेकिन जब यीशु उन लोगों के बीच में आया था, तो उस ने पाया था कि वे लोग परमेश्वर की व्यवस्था से बहुत दूर चले गए थे और उसकी इच्छा अनुसार नहीं चल रहे थे। जिसके लिए यीशु ने उन्हें डांटा भी था, और उनसे कहा था कि वे परमेश्वर की आराधना मनुष्यों के बनाए धर्मोपदेशों के अनुसार कर रहे थे। और इसी कारण से यहूदियों के अगुवे, उनके धर्म-प्रचारक तथा उनके लीडर यीशु के शत्रु बन गए थे। प्रभु यीशु की सच्ची तथा खरी बातों को प्रतिदिन सुन-सुनकर वे यीशु के प्रति डाह तथा ईर्ष्या से भर गए थे। सो उन्होंने प्रभु यीशु

की हत्या करने की योजना बनाई। पर यह काम आसान नहीं था। क्योंकि जहां कहीं भी प्रभु जाता था लोगों की भीड़ की भीड़ उसके पीछे हो लेती थी। वह उनके सामने चिन्ह तथा सामर्थपूर्ण कामों को दिखाता था, वह उनके सब बीमारों को चंगाई देता था और उन्हें ऐसे-ऐसे उपदेश देता था, जिनके कारण लोग यह विश्वास करते थे कि वह सचमुच में स्वर्ग से परमेश्वर की ओर से आया है। इसलिए उन लोगों के लिए यीशु की हत्या करना कोई सरल काम नहीं था। सो उन्होंने एक षड्यन्त्र रचा। और यीशु के एक चेले को, जो धन से प्रेम करता था, पैसों का लालच दिया। यीशु का चेला होने के कारण वह यह जानता था कि यीशु कब और कहां एकान्त में प्रार्थना करने के लिए जाता है। सो उसने उन लोगों को इस बात की जानकारी दे दी। इस प्रकार वे लोग यीशु को पकड़कर वहां के सबसे बड़े अधिकारी पीलातुस के पास ले गए। और यीशु पर झूठे दोष लगाकर पीलातुस से मांग की कि वह यीशु को क्रूस पर चढ़ाकर मृत्यु दण्ड देने की आज्ञा दे। पर पीलातुस ने उनसे कहा कि मैं यीशु में ऐसा कोई दोष नहीं पाता जिसके सबब वह क्रूस पर चढ़ाया जाए। लेकिन वे लोग चिल्ला-चिल्लाकर यीशु के ऊपर झूठे दोष लगाते रहे और यह कहते रहे कि हमारी भी एक व्यवस्था है जिसके कारण उसे क्रूस पर चढ़ाया ही जाना चाहिए क्योंकि उसने अपने आप को "परमेश्वर का पुत्र'' कहा है। वे सब के सब लोग यहूदी थे और यीशु भी उन्हीं में से एक था। इसलिए पीलातुस ने विवश होकर यीशु को उनके हाथों में सौंप दिया कि जैसा वे चाहें वे यीशु के साथ करें। और उन्होंने यीशु को ले जाकर उसे क्रूस पर चढ़ाकर मृत्यु दण्ड दे दिया।

जब वे लोग प्रभु यीशु को क्रूस पर चढ़ा रहे थे, तो प्रभु बार-बार उनके लिए यह प्रार्थना कर रहा था कि हे पिता इसका दोष इन पर मत लगाना क्योंकि ये तो जानते ही नहीं कि ये क्या कर रहे हैं। (लूका २३:३४)। और यह बात सच थी। क्योंकि वे लोग वास्तव में नहीं जानते थे कि वे क्या कर रहे थे। परन्तु प्रभु जानता

था कि उसे क्रूस पर चढ़ाकर वे लोग परमेश्वर की एक बड़ी योजना को सफल बना रहे थे। परमेश्वर के काम, मित्रो, बड़े ही निराले हैं। जो हमारी समझ के परे हैं। बाइबल में लिखा है, कि क्रूस की कथा नाश होनेवालों के निकट तो मूर्खता है पर उनके लिए जो पापों से उद्धार पाएंगे वह परमेश्वर की सामर्थ है।

और मेरी आशा है कि आज आप अपने जीवन में परमेश्वर की सामर्थ के महत्व को पहचानकर उसके अनुग्रह से उसके उस उद्धार को प्राप्त करने का निश्चय करेंगे, जो क्रूस पर उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा मनुष्य को मिलता है।

बाइबल से हम क्या सीखते हैं ?

मित्रो, मेरा यह पूरा विश्वास है कि बाइबल परमेश्वर के वचन की पुस्तक है। अर्थात् केवल बाइबल ही ऐसी पुस्तक है जिसके द्वारा परमेश्वर ने अपनी सम्पूर्ण इच्छा को सारे मनुष्यों के लिए प्रदर्शित किया है। इसीलिए इस प्रोग्राम में मैं बार-बार आपका ध्यान उन बातों की ओर दिलाता हूँ जिनकी शिक्षा हमें बाइबल से मिलती है। हां, यू तो पृथ्वी पर बहुत सी पुस्तकें हैं, और बहुत सी अच्छी और धार्मिक पुस्तकें भी हैं। जिनमें कुछ धार्मिक लोगों के विचारों तथा वचनों को लिखा गया है। उन पुस्तकों से हमें अच्छी-अच्छी बातें सीखने को मिलती हैं। पर जब बात बाइबल पर आती है तो हम यह देखते हैं कि बाइबल केवल एक पुस्तक ही नहीं है पर इस पुस्तक में उन बातों को लिखा गया है जो परमेश्वर के मुख से निकली हैं और जिन्हें उसकी प्रेरणा से लिखा गया है। हां, यह तो सच है कि बाइबल की पुस्तकों को मनुष्यों ने लिखा है। पर जो कुछ उन्होंने लिखा था, वह सब परमेश्वर की ही प्रेरणा से लिखा था। इसीलिए बाइबल को हम परमेश्वर का वचन भी कहते हैं। इस थोड़े से समय में हम कुछ ऐसी खास बातों पर विचार करेंगे जिनकी शिक्षा हमें बाइबल से मिलती है।

सबसे पहले बाइबल में हम परमेश्वर के बारे में पढ़ते हैं। बाइबल हमें बताती है, कि हम सबका और सारे जगत का केवल एक ही परमेश्वर है। और वह परमेश्वर आत्मा है। अर्थात् वह हमारी तरह भौतिक या शारीरिक नहीं है। परमेश्वर सर्व-शक्तिमान तथा सर्व-विद्यमान और सर्व-ज्ञानि है। इससे हम यह सीखते हैं कि हम परमेश्वर को किसी भवन या घर में बन्द नहीं कर सकते। और हम अपनी कल्पना से उसकी कोई शक्ल या सूरत नहीं बना सकते। क्योंकि आत्मा तो निराकार है। और यदि कोई मनुष्य परमेश्वर को अपनी कल्पना में कैद करके उसकी कोई सूरत या मूरत या उसका

कोई चित्र बनाता है। तो वह परमेश्वर को सीमित करता है और उस महान तथा सर्वशक्तिमान की तुलना पृथ्वी की उन वस्तुओं से करता है जिन्हें स्वयं परमेश्वर ने ही सृजा है। परमेश्वर के सर्व-विद्यमान होने का प्रमाण सारी पृथ्वी और आकाश में उन सब वस्तुओं के द्वारा प्रकट है जिन्हें हम देखते हैं और अनुभव करते हैं। क्योंकि यदि कुछ है तो कुछ था। और वह जो आदि से वर्तमान है वही परमेश्वर अर्थात परमात्मा है जिसने जगत की सारी वस्तुओं की सृष्टि की है। वह परमेश्वर सब कुछ जानता है। वह वर्तमान तथा भविष्य दोनों को जानता है। वह मनुष्य को बाहर से और भीतर से भी जानता है।

बाइबल हमें सिखाती है, कि मनुष्य को आरम्भ में परमेश्वर ने अपने स्वरूप पर बनाया था। इसका अर्थ यह है, कि, मनुष्य परमेश्वर की ही तरह एक आत्मिक प्राणी है—जब वह मृत्यु के द्वारा अपने शरीर से अलग होता है तो वह आत्मिक रूप में सदा वर्तमान रहता है, जिस प्रकार से परमेश्वर वर्तमान है। इस बात का अर्थ, कि आरम्भ में परमेश्वर ने मनुष्य को अपनी ही समानता पर बनाया था, यह भी है, कि आरम्भ में मनुष्य में कोई पाप नहीं था, पर वह परमेश्वर की ही तरह पवित्र था। इसका अर्थ यह भी है कि जिस प्रकार परमेश्वर स्वयं अपनी इच्छा से स्वतन्त्र है। वैसे ही परमेश्वर ने मनुष्य को भी एक स्वतन्त्र इच्छा के साथ बनाया था। यानि परमेश्वर ने मनुष्य को यह तो अवश्य बताया है कि क्या गलत है और क्या सही है। पर इस बात का चुनाव स्वयं प्रत्येक मनुष्य को करना पड़ता है कि वह सही करे या गलत करे। यदि कोई मनुष्य गलत काम करना चाहता है, अपनी इच्छा से, तो परमेश्वर उसे रोकता नहीं है। हां, परमेश्वर ने मनुष्य पर यह तो अवश्य प्रकट किया है कि गलत क्या है और सही क्या है। पहले तो स्वयं मनुष्य का विवेक ही उसे बताता है जब वह कोई गलत काम करता है कि वह कोई गलत काम कर रहा है, और फिर परमेश्वर ने अपनी बाइबल के द्वारा मनुष्य को बताया है कि सही क्या है और गलत क्या है। परमेश्वर की इच्छा के अनुसार न चलना

ही, बाइबल कहती है, पाप है। और पाप की मजदूरी अर्थात पाप का परिणाम आत्मिक मृत्यु अर्थात् नरक का अनन्त दण्ड है। लेकिन परमेश्वर किसी भी मनुष्य को पाप करने से नहीं रोकता। क्योंकि उसने मनुष्य को स्वयं अपने स्वरूप पर और अपनी समानता पर बनाया है, अर्थात् अपनी ही तरह स्वतन्त्र इच्छा का एक प्राणी। परमेश्वर ने मनुष्य को एक गुलाम या दास या एक पशु के समान नहीं बनाया है। जिससे वह जैसा चाहे व्यवहार करे और जो चाहे वही उससे करवाए। किन्तु परमेश्वर ने मनुष्य को अपने समान बनाया है। अर्थात मनुष्य एक स्वतन्त्र इच्छा से जीवन व्यतीत करनेवाला प्राणी है।

लेकिन परमेश्वर जानता है कि मनुष्य ने पाप किया है, और पृथ्वी पर सभी मनुष्य पापी हैं–क्योंकि हम सभी परमेश्वर की इच्छानुसार चलने में चूक जाते हैं। इसलिए परमेश्वर ने मनुष्य पर एक ऐसा मार्ग प्रकट किया है जिसके द्वारा प्रत्येक मनुष्य अपने पापों से छुटकारा पाकर फिर से परमेश्वर की संगति में वापस लौट आए, और एक पापी से पवित्र बन जाए और उस मार्ग को अपनाकर फिर से परमेश्वर के लेखे में धर्मी बन जाए। किन्तु यहां भी परमेश्वर का वही सिद्धान्त लागू होता है, कि मार्ग तो परमेश्वर ने मनुष्य पर प्रकट कर दिया है और मनुष्य को बता भी दिया है कि अपने पापों से छुटकारा पाने के लिए उसे क्या करना चाहिए। लेकिन चुनाव स्वयं मनुष्य को ही करना है। बाइबल हमें बताती है कि परमेश्वर ने प्रत्येक मनुष्य के लिए केवल एक बार मरना और उसके बाद न्याय का होना निश्चित किया है। बॉइबल हमें स्वर्ग के बारे में भी बताती है कि स्वर्ग वह आत्मिक स्थान है जहां वे लोग प्रवेश करेंगे जिन्होंने परमेश्वर की इच्छा के मार्ग को अपनाकर अपने पापों से छुटकारा प्राप्त कर लिया है। और बाइबल हमें नरक के बारे में भी बताती है, कि नरक वह आत्मिक स्थान है, जहां वे लोग प्रवेश करेंगे जिन्होंने परमेश्वर के मार्ग पर न चलकर और उसकी

इच्छा को न अपनाकर अपने पापों से छुटकारा नहीं पाया है।

एक जगह बाइबल में हम इस प्रकार पढ़ते हैं, कि जब परमेश्वर का प्रेरित पौलुस यूनान के अथेने नगर में गया था तो उसने अनुभव किया था कि वहाँ के लोग बड़े ही धार्मिक प्रवृति के थे। सो उसने उनसे कहा था, कि, 'हे अथेने के लोगो मैं देखता हूँ, कि तुम हर बात में देवताओं के बड़े माननेवाले हो। क्योंकि मैं फिरते हुए तुम्हारी पूजने की वस्तुओं को देख रहा था, तो एक ऐसी बेदी भी पाई, जिस पर लिखा था कि "अनजाने ईश्वर के लिए" सो जिसे तुम बिना जाने पूजते हो, मैं तुम्हें उसी का समाचार सुनाता हूँ। जिस परमेश्वर ने पृथ्वी और उसकी सब वस्तुओं को बनाया है वह स्वर्ग और पृथ्वी का स्वामी होकर हाथ के बनाए हुए मन्दिरों में नहीं रहता। और न किसी वस्तु का प्रयोजन रखकर मनुष्यों के हाथों की सेवा लेता है, क्योंकि वह तो आप ही सबको जीवन और स्वास और सब कुछ देता है। उसने एक ही मूल से मनुष्यों की सब जातियां सारी पृथ्वी पर रहने के लिए बनाई हैं ..... सो परमेश्वर का वंश होकर हमें यह समझना उचित नहीं कि ईश्वरत्व सोने या रूपए या पत्थर के समान है जो मनुष्य की कारीगरी और कल्पना से गढ़े गए हो। इसलिए परमेश्वर अज्ञानता के समयों से आनाकानी करके, अब हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है। क्योंकि उसने एक दिन ठहराया है जिसमें वह उस मनुष्य के द्वारा धर्म से जगत का न्याय करेगा, जिसे उसने ठहराया है और उसे मरे हुओं में से जिलाकर यह बात सब पर प्रमाणित कर दी है।'' (प्रेरितों १७:२२-३१)।

परमेश्वर का ज़िन्दा और सामर्थपूर्ण वचन परमेश्वरत्व को छोड़कर इस जगत में आया था। उसने जगत के सारे पापों को अपने ऊपर लेकर क्रूस के ऊपर अपने आपको बलिदान किया था। वह पापियों के बदले में क्रूस के ऊपर मारा गया था। उसने क्रूस पर पापियों के लिए अपना लोहू बहाकर जगत के सारे पापों का प्रायश्चित

किया था। वह परमेश्वर की इच्छा से क्रूस के ऊपर मारा गया था। वह मनुष्यों के हाथों से एक कब्र के भीतर गाड़ा गया था। और फिर परमेश्वर की सामर्थ से तीसरे दिन वह जिलाया गया था। और जब वह स्वर्ग पर वापस जा रहा था तो उसने अपने चेलों को यह आज्ञा दी थी कि तुम सारे जगत में जाकर सारी पृथ्वी के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो और जो लोग मेरे सुसमाचार को सुनकर विश्वास करें, उन्हें पिता और पुत्र और पवित्रात्मा के नाम से बपतिस्मा दो। क्योंकि जो विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा, पर जो विश्वास न करेगा, वह न्याय के दिन दोषी ठहराया जाएगा।

परमेश्वर का पुत्र यीशु मसीह मनुष्यों और परमेश्वर के बीच में एक मध्यस्थ है। वह स्वर्ग से परमेश्वरत्व को छोड़कर आया था और एक इंसान बना था। उसने अपनी मृत्यु के द्वारा सारे जगत के पापों का प्रायश्चित किया था। और जब हम उसमें विश्वास करते हैं और उसकी आज्ञा को मानते हैं तो वह हमारा मुक्तिदाता और उद्धारकर्त्ता बन जाता है। इसी सुसमाचार को हमें देने के लिए परमेश्वर ने अपनी बाइबल को हमें दिया है। क्योंकि हमारा परमेश्वर हम सबसे विशाल प्रेम रखता है और वह नहीं चाहता कि हममें से कोई भी नरक में नाश हो। किन्तु वह यह चाहता है कि हम सब उसके पुत्र के द्वारा उसके स्वर्ग में प्रवेश करके अनन्त जीवन पाएं। लेकिन चुनाव हमें स्वयं करना है।

सच्चा परिवर्तन

मित्रो, जिस यीशु मसीह का प्रचार मैं आप के सम्मुख करता हूँ, मेरा विश्वास है कि वह परमेश्वर का पुत्र है। बाइबल कहती है कि वह परमेश्वर का पुत्र है। उसका जीवन और उसकी शिक्षाएँ और उसके काम सभी इस बात की गवाही देते हैं कि वह पृथ्वी पर साक्षात परमेश्वर था। किन्तु वह जगत में क्यों आया था ? इस प्रश्न का उत्तर मैं यह कहकर दे सकता हूँ कि वह इस पृथ्वी पर लोगों के जीवनों को और उनके मनों को बदलने के लिए आया था। वह पृथ्वी पर मनुष्य को फिर से वैसा ही बनाने के लिए आया था, जैसे कि आरम्भ में परमेश्वर ने इंसान को बनाया था। और इस काम को उसने दो तरह से अंजाम दिया था एक तो उसने अपने पवित्र और नेक तथा निस्वार्थ जीवन के द्वारा लोगों के सामने यह आदर्श रखा था कि उन्हें किस प्रकार पवित्र और अन्य लोगों की भलाई के लिए अपना जीवन पृथ्वी पर व्यतीत करना चाहिए। और दूसरा महत्वपूर्ण काम यीशु ने यह किया था कि उसने परमेश्वर की इच्छा से सारे जगत के पापों को अपने ऊपर लेकर अपनी मृत्यु के द्वारा हर एक इंसान के पापों का प्रायश्चित किया था। इसीलिए बाइबल में यह लिखा है कि अब जो यीशु मसीह में है उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं होगी क्योंकि वे अपने शरीर की अभिलाषाओं के अनुसार नहीं परन्तु परमेश्वर के आत्मा के अनुसार चलते हैं। और बाइबल कहती है कि अब यदि कोई मसीह में है तो वह एक नई सृष्टि है ! एक नया इंसान ! इसका अर्थ क्या है ? हमारे संसार में आज प्रत्येक स्थान पर परिवर्तन पर बहुत अधिक बल दिया जा रहा है। जिन वस्तुओं को हम मैला और सड़ा-गला कहकर फेंक देते हैं, उन्हीं चीज़ों को परिवर्तित करके उन्हें उर्जा, और गैस और खाद का रूप दिया जा रहा है। कई स्थानों पर हम देखते हैं कि कुछ लोग

फेंकी हुई व्यर्थ समझी जानेवाली वस्तुओं को चुन-चुनकर इकट्ठा करके ले जाते हैं। लोहा, प्लास्टिक, कांच, कागज़, और चिथड़े सब कुछ वे लोग इकट्ठा करके ले जाते हैं। क्या करते हैं वे लोग उस सब कूड़े-करकट का ? वह सब बिक जाता है। और फिर वह बड़े-बड़े कारखानों में जाता है, जहाँ उन्हें मशीनों में डालकर एक नया रूप दिया जाता है। उनसे भांति-भांति की अनेकों अन्य वस्तुएँ बनाई जाती हैं। और इसी को हम परिवर्तन कहते हैं। अर्थात् किसी एक वस्तु को लेकर उसी वस्तु को एक दूसरी वस्तु के रूप में बना डालना। सो परिवर्तन का मंतलब है किसी वस्तु को एक दूसरी चीज़ के रूप में बदल डालना।

और यही काम करने के लिए परमेश्वर का पुत्र यीशु मसीह इस ज़मीन पर आया था। उसने यह सिखाया था कि यदि कोई मनुष्य नए सिरे से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश कर ही नहीं सकता। अर्थात् स्वर्ग में जाने के लिए प्रत्येक मनुष्य को फिर से एक नया इंसान बनना आवश्यक है। अपने अनुयायीयों से प्रभु यीशु ने एक बार यूं कहा था, कि यदि तुम न फिरो और बालकों के समान बनो, तो स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने नहीं पाओगे। (मत्ती १८:३)। यहां प्रभु के कहने का यह अभिप्राय कदापि नहीं था कि हम अपना कद छोटा कर लें, या बच्चों की तरह तुतला के बोलने लगे, या बालकों की सी हरकतें करने लगें। पर बालकों के समान बनने का अभिप्राय इस बात से है कि जिस प्रकार छोटे नन्हें बालक प्रत्येक आवश्यकता के लिए अपने पिता और माता पर निर्भर करते हैं; जहाँ वे उन्हें ले जाते हैं वहां वे उनकी इच्छानुसार चले जाते हैं; और जो वे उन्हें कहते हैं वही वे करते हैं; जो वे उन्हें पहनने को देते हैं वही वे पहन लेते हैं; और जिस स्कूल में भी वे उनका दाखिला करा देते हैं, उसी स्कूल में वे प्रतिदिन जाकर पढ़ते हैं। अर्थात वे सब बातों में अपने माता-पिता पर ही निर्भर रहते हैं। और ठीक ऐसा ही व्यवहार हमारा स्वर्गीय

पिता भी चाहता है कि हम सब उसके प्रति रखें। जो वह कहता है, वही हम करें और जो वह चाहता है, उसी के अनुसार हम चलें। अपना-अपना मन फिराकर बालकों के समान बनने का अर्थ इसी बात से है, और ऐसा परिवर्तन प्रत्येक मनुष्य के जीवन में आना बड़ा ही आवश्यक है। एक नई सृष्टि बनने का; एक नया इंसान बनने का और फिर से जन्म लेने का अभिप्राय इसी बात से है। और इस विशेष बात पर ज़रूर ध्यान दें, कि प्रभु यीशु ने कहा था; कि जब तक कोई इंसान नए सिरे से फिर से नहीं जन्मेगा, एक नया इंसान नहीं बनेगा, तब तक वह मनुष्य परमेश्वर के राज्य में यानि उसके स्वर्ग में प्रवेश नहीं कर सकता !

एक सच्चे परिवर्तन का अर्थ इस बात से है, कि जिस मार्ग पर मनुष्य पहले चलता था उस पर चलना वह छोड़ देता है। और जिन बातों को वह पहले मानता था उन्हें मानना वह छोड़ देता है। इस बात की एक मिसाल हमें बाइबल के नए नियम में प्रेरितों के कामों की पुस्तक के उन्नीसवें अध्याय में मिलती है, जहाँ हम पढ़ते हैं कि जब लोगों ने परमेश्वर के वचन को और मसीह के सुसमाचार को सुना था तो उन्होंने उस पर विश्वास किया था और अपने-अपने गलत कामों को मानकर अपना मन फिराया था और जादू-टोना करनेवालों में से बहुतों ने अपनी-अपनी पोथियाँ इकट्ठी करके सबके सामने जला दी थी। ऐसे ही बाइबल में रोमियों की पुस्तक के ६ अध्याय में, प्रेरित पौलुस कुछ लोगों के बारे में लिखकर कहता है कि "परमेश्वर का धन्यवाद हो कि तुम जो पाप के दास थे, तौभी मन से उस उपदेश के माननेवाले हो गए, जिसके सांचे में ढाले गए थे और पाप से छुड़ाए जाकर धर्म के दास हो गए।" उन्हीं लोगों से मसीह के प्रेरित ने कहा था, कि जब हम पापी ही थे तभी परमेश्वर के अनुग्रह से उसका पुत्र हमारे पापों का प्रायश्चित करने को पृथ्वी पर आया था और वह हमारे पापों के कारण बलिदान हुआ था। किन्तु इसका अर्थ यह नहीं है, प्रेरित ने उनसे कहा था

कि हम पाप करते ही रहें। क्योंकि हम जब पाप के लिए मर गए हैं तो फिर आगे को उसमें क्योंकर जीवन बिताएँ ? और फिर प्रेरित ने उनसे पूछा था कि "क्या तुम नहीं जानते कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया तो उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया, सो उसकी मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया था, वैसे ही हम भी एक नए जीवन की सी चाल चलें। क्योंकि यदि हम उसकी मृत्यु की समानता में उसके साथ जुट गए हैं, तो निश्चय ही उसके जी उठने की समानता में भी जुट जाएंगे। क्योंकि हम जानते हैं कि हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया है ताकि पाप का शरीर व्यर्थ हो जाए और हम आगे को पाप के दासत्व में न रहें।"

मित्रो, हमारा परमेश्वर चाहता है कि हम में से प्रत्येक व्यक्ति उसके पुत्र यीशु मसीह में होकर एक नई सृष्टि बन जाए। वह हमें मसीह यीशु के भीतर एक नया इंसान बनाना चाहता है। ताकि उसमें होकर हम उसके द्वारा पाप से मुक्त हो जाएं और परमेश्वर के स्वर्ग में प्रवेश करने के योग्य बन जाएं। वह हमारे जीवनों को बदलना चाहता है। वह हमें एक नया मन और एक नया व्यक्तित्व देना चाहता है। वह चाहता है कि हम सब उसके पुत्र यीशु मसीह की तरह बन जाएं, जो गाली सुनकर किसी को गाली नहीं देता था, जो किसी से भी बैर, ईर्ष्या तथा कपट नहीं रखता था। और जो परमेश्वर से और सब मनुष्यों से प्रेम रखता था। और उसने हमें यह भी बताया है कि हम उसके पुत्र मसीह में होकर किस प्रकार से एक नए इंसान बन सकते हैं। यानि जब हम अपने सारे मन से उसमें विश्वास लाते हैं कि वह परमेश्वर का पुत्र और जगत का उद्धारकर्त्ता है। और जब हम अपने प्रत्येक पाप से मन फिराकर अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए जल में मसीह की आज्ञानुसार बपतिस्मा लेते हैं। तो इस प्रकार बपतिस्मे के पानी में से बाहर

आकर हम यह व्यक्त करते हैं कि हमारा पुराना मनुष्यत्व मर चुका है और गाड़ा भी जा चुका है ताकि आगे को हम प्रभु यीशु मसीह में होकर उसकी शिक्षाओं पर चलकर ही अपना जीवन व्यतीत करें।

जब हम प्रभु यीशु मसीह के भीतर आ जाते हैं, तो हम उसके अनुयायी बन जाते हैं और वह हमें अपने सब अनुयायीओं की मण्डली में अर्थात अपनी उस कलीसिया में मिला लेता है जिसके भीतर वे सब लोग हैं जिन्होंने उसकी मृत्यु के द्वारा अपने-अपने पापों से उद्धार प्राप्त किया है। उन लोगों को सम्बोधित करके पवित्र बाइबल एक जगह इस प्रकार कहती है कि वे एक चुना हुआ वंश हैं और वे परमेश्वर के पवित्र लोग और उसकी निज प्रजा हैं। जिन्हें परमेश्वर ने संसार के अंधकार में से अपनी अद्भुत ज्योति में बुलाया है। ताकि वे उसके गुणों को प्रकट करें।

क्या आप परमेश्वर की इच्छा को मानकर एक नए इन्सान बनना चाहते हैं? क्या आप उसके पवित्र लोगों की मण्डली में शामिल होना चाहते हैं? परमेश्वर आपको बुला रहा है। उसका पुत्र मसीह आपको बुला रहा है। निमन्त्रण आपका है। और चुनाव भी आपका है। क्या आप उसके पास सारे मन से विश्वास करके आएंगे? यदि नहीं! तो फिर अनन्तकाल में आपकी आत्मा का क्या होगा?